सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ — 226007
फोन : 0522—2740406
फैक्स : 0522—2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विदेशों में (वार्षिक) 30 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

अगस्त, 2016 वर्ष 15 अंक 06

या रब क़बूल हज हो उमरा भी हो क़बूल

जब इन्तिज़ारे कुरअ: था हालत थी क्या अ़जीब
निकला जो नाम कुरअ: में तो खुल गये नसीब
अब माहे हज क़रीब है, परवाज़े हज क़रीब
पढ़ते हैं हम दुरूद तो पढ़ते हैं या मुजीब
लब्बैक याद ख़ूब है कल्मा भी याद ख़ूब
क़ुर्आन से हैं कर ली आयात याद ख़ूब
या रब तेरी मदद से मांगें वहां दुआ
अपने लिए दुआ और सब के लिए दुआ
या रब क़बूल हज हो उमरा भी हो क़बूल
पढ़ना सलाम रौज़े पे या रब हो वह क़बूल
माँगें दुआएं वाँ जो या रब हों सब क़बूल

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की. शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
हज्जे बैतुल्लाह	सम्पादकीय	6
दीने इस्लाम का मिज़ाज	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	12
हज और उमरा सम्बन्धित	मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी	15
एक हाजी के सफरे हज	इदारा	20
अल्लाह का महान वरदान "पानी"	इमाम गज़ाली (रह0)	23
स्वतंत्रता दिवस (पद्य)	इदारा	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	26
भारत दास्ता की बेड़ियों से	ई0 जावेद इक़बाल	29
मानवता का संदेश	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी	32
शिक्षा का महत्व	मुहम्मद निजामुद्दीन	33
पारलौकिक जीवन	मुफ़्ती तंजीम आलम क़ासमी	36
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुआर्न की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

सूर-ए-आले इमरानः

अनुवाद– आप कह दीजिए कि हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस पर जो हम पर उतारा गया और उस पर जो इब्राहीम व इस्माईल और इसहाक़ व याकूब और उनकी संतान पर उतारा गया और जो मूसा व ईसा और दूसरे पैग़म्बरों को उनके पालनहार की ओर से दिया गया, हम उनमें परस्पर कोई विभेद नहीं करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं[1](84) जो भी इस्लाम के सिवा किसी और दीन (धर्म) को चाहेगा तो उससे वह हरगिज़ स्वीकार न किया जाएगा और वह आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में होगा(85) अल्लाह तआला ऐसे लोगों को कैसे हिदायत दे सकता है जिन्होंने मानने के बाद इनकार किया जबकि उन्होंने देख लिया कि पैग़म्बर सच्चे हैं और उनके पास खुली निशानियां आ चुकीं और अल्लाह ऐसे अन्याय करने वालों को हिदायत नहीं दिया करता[2](86) ऐसे लोगों की सज़ा यही है कि उन पर अल्लाह की और फरिश्तों की और सारे लोगों की फिटकार है(87) वे उसी में पड़े रहेंगे न उनसे अज़ाब हलका किया जाएगा और न उनको मुहलत दी जाएगी(88) सिवाए उनके जिन्होंने उसके बाद तौबा कर ली और सुधार पैदा कर लिया तो निःसंदेह अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा दयालू है(89) जिन्होंने मानने के बाद इनकार किया फिर इनकार में बढ़ते चले गये उनकी तौबा कदापि स्वीकार न की जाएगी और यही लोग पथभ्रष्ट हैं[3](90) बेशक जिनहोंने इनकार किया और इनकार करने वाले हो कर मरे तो हरग़िज़ उनमें से किसी से ज़मीन भर सोना भी स्वीकार न किया जाएगा चाहे वह उसको फिदिया में दे डालें यही वे लोग हैं जिनके लिए दुखदाई अज़ाब है और उनकी कोई सहायता करने वाला न होगा[4](91) तुम हरगिज़ पूरी नेकी को नहीं पा सकते जब तक तुम उस चीज़ को न ख़र्च कर दो जो तुम्हें पसंद है और तुम जो भी ख़र्च करते हो अल्लाह उसको ख़ूब जानता है[5](92) तौरेत उतरने से पहले सब खाने बनी इस्राईल के लिए हलाल थे सिवाए उनके जो खुद इस्राईल ने अपने ऊपर हराम कर लिया था, आप कह दीजिए तौरेत ले आओ और उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो[6](93) फिर उसके बाद भी जो अल्लाह पर झूठ बांधे तो वही लोग अन्यायी हैं[7](94) आप कह दीजिए कि अल्लाह ने तो बात सच–सच कह दी बस अब तुम इब्राहीम के दीन पर चलो जो (अल्लाह के लिए) एकाग्र थे और वे शिर्क करने वालों में न थे[8](95) सबसे पहला घर जो लोगों के (इबादत) करने के लिए निर्धारित किया गया वही है

जो मक्का में है, पावन है और सारे संसारों के लिए मार्ग दर्शक है[9] (96) उसमें खुली हुई निशानियां हैं मक़ाम–ए–इब्राहीम है और जो भी उसमें प्रविष्ट हुआ वह अमन से हुआ और अल्लाह के लिए उस घर का हज करना उन लोगों पर अनिवार्य है जो भी वहां तक रास्ते का सामर्थ्य रखते हों और जिसने इनकार किया तो अल्लाह को दुन्या की परवाह नहीं(97) आप कह दीजिए कि ऐ अहल–ए–किताब! (किताब वालो) तुम क्यों अल्लाह की निशानियों का इनकार करते हो जब कि तुम जो भी करते हो वह अल्लाह के सामने है(98) आप कह दीजिए कि ऐ अहले किताब! तुम क्यों अल्लाह के रास्ते में टेढ तलाश कर–कर के ईमान लाने वाले को उससे रोकते हो जब कि तुम (ख़ुद) गवाह हो और अल्लाह तुम्हारे बुरे कामों से बेख़बर नहीं(99) ऐ ईमान वालो! अगर तुम अहल–ए–किताब में से किसी भी गिरोह की बात मान लोगे तो वे तुम्हें ईमान लाने के बाद काफ़िर बना कर छोड़ेंगे(100)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. ईमान लाने के लिहाज़ से सब बराबर हैं सब पर ईमान लाना समान रूप से अनिवार्य है, हां उनमें जो श्रेणियों का अंतर है वह पवित्र कुरआन से सिद्ध होता है "तिलकर्रुसुल फ़ज़्ज़लना बअ़जुहुम अलाबाज़" यह वे रसूल हैं जिनमें कुछ को कुछ पर हमने बड़ाई प्रदान की।

2. जो सो रहा है उसको जगाया जा सकता है और जो सोने का ढोंग रचा हो उसको कौन जगा सकता है, बहुत सी घटनाएं हदीस में हैं कि यहूदियों ने आपकी सेवा में आकर विश्वास कर लिया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच्चे पैगम्बर हैं लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा मान लो और ईमान ले आओ तो मुकर गए ओर टाल कर निकल गए।

3. यहूदियों ने विशेष रूप से यही किया, इनकार किया और फिर दुश्मनी में सारी सीमाएं लांघ गए, उनके बारे में कहा जा रहा है कि उनको तौबा की भी तौफ़ीक़ न मिलेगी।

4. ईमान ही सफलता की नींव है अगर यह न हो तो न दुनिया में सद्क़ा ख़ैरात स्वीकार है और आखिरत में कोई पूरी दुनिया भी बचाव के लिए बदले में देने चाहे तो कुछ लाभ नहीं, यहां बड़े–बड़े नौकर चाकर वाले वहां असहाय पड़े होंगे।

5. मतलब केवल धन दौलत ही नहीं बल्कि इज़्ज़त, राहत व प्रेम हर चीज़ को खर्च करना और उसकी कुर्बानी देना, इसमें शामिल है और इसमें यहूदियों की ओर भी इशारा है जो ईमान के लए राज सत्ता छोड़ने के लिए तैयार न थे।

6. यहूदियों ने शगूफ़ा छोड़ा कि तुम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के यहां यह सब चीज़ें हलाल थीं फिर तौरेत के उतरने के समय कुछ चीज़ें हराम की गई और याक़ूब अलैहिस्सलाम को कोई बीमारी थी तो उन्होंने

शेष पृष्ठ ......11...पर...

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

एहसान का बदला:-

हज़रत उसामा बिन ज़ैद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर किसी के साथ कोई एहसान किया गया और वह एहसान करने वाले के सामने "जज़ाकल्लाहु खैरा" (अल्लाह तुम को अच्छा बदला दे) कह दे तो गोया उसने एहसान करने वाले की पूरी तारीफ कर दी।

(तिर्मिजी)

औलाद के हक में बद दुआ न करने का आदेश:-

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम अपनी जानों, मालों और औलद को बद दुआ मत दो (जैसे बाज लोग गुस्से में आ कर कह देते हैं तेरे हाथ टूटें, तेरा नास हो वगैरह) ऐसा न हो कि वह कबूलियत की घड़ी हो तो वह तुम्हारी बद दुआ कबूल हो जाये।

(मुस्लिम)

दुआ के कबूल होने की रूकावटें:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम्हारी दुआऐं जरूर कबूल होती हैं अगर जल्दी न करो, और यह न कहो कि मैंने दुआ की और कबूल न हुई। (बुखारी व मुस्लिम शरीफ)

और मुस्लिम शरीफ की एक रिवायत में है कि बंदे की दुआ हमेशा कबूल होती है जब तक कि वह दुआ गुनाह की और रिशता तोड़ने की न हो और यह कि जल्दी न करे, लोगों ने पूछा जल्दी कैसी, फरमाया यह न कहे कि मैंने दुआ की और कबूल न हुई, फिर थक जाये और छोड़ दें

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लोगों ने अर्ज किया कौन से वक़्त दुआ कबूल होती है, फरमाया पिछली रात को (यानी तहज्जुद के वक़्त) और हर फर्ज नमाज़ के बाद। (तिर्मिज़ी)

कबूलियत या उसका बदला:-

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर मुसलमान की दुआ अल्लाह तआला कबूल फरमाता है—

उसकी मुंह मांगी मुराद अता फरमाता है, और अगर किसी मस्लिहत से नहीं देता तो उसकी किसी आने वाली मुसीबत को दूर फरमा देता है मगर गुनाह और रिशता तोड़ने की दुआ न हो, एक आदमी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह अब तो हम बहुत कुछ मांग लेंगे, आपने फरमाया अल्लाह तआला उससे भी ज़ियादा अता फरमाने वाला है। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू सईद रज़ि0 से रिवायत है कि अगर मुंह मांगी मुराद न मिली तो उतना ही अज्र उसके लिए रख छोड़ता है।

शेष पृष्ठ ......14...पर..

हज्जे बैतुल्लाह (अल्लाह के घर का हज)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

हज इस्लाम का पांचवां रुक्न (स्तम्भ) है। हदीस में आया है कि "इस्लाम की नींव पाँच स्तम्भों पर है—"

(1) इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त और कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। (2) नमाज़ क़ाइम करना (अर्थात पाँचों समय की नमाज़ें नियमपूर्वक भली भांति पढ़ना)। (3) ज़कात देना। (4) रमज़ान के रोज़े रखना। (5) मार्ग के सामर्थ पर अल्लाह के घर का हज करना। (मुस्लिम) और पवित्र कुर्आन में आया है "और लोगों पर अल्लाह का हक है कि जिसको वहां तक पहुंचने की सामर्थ्य प्राप्त हो, वह इस घर का हज करे, और जिसने इनकार किया तो (इस इनकार से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता) अल्लाह तो सारे संसार से निर्पेक्ष है।

(आले इमरानः 97)

यद्यपि हज धनवानों तथा मार्ग पर सामर्थ्य वालों पर जीवन में एक बार अनिवार्य है। तथा हर व्यक्ति हज कर भी नहीं सकता है फिर भी हज की अभिलाषा हर मुसलमान को रहती है। वह चाहता है कि जिस घर की ओर मुंह करके वह नमाज़ें पढ़ता है उस घर को अपनी आखों से देखे तथा मदीना मुनव्वरा पहुंच कर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में नमाज़ें पढ़े और अल्लाह के प्रिय नबी की मुबारक कब्र पर खड़े हो कर सलाम पढ़े।

हज पर जाने वाले लोग जानकारों से जानकारी लेकर हज के सामान की तैयारी कर लेते हैं। सफर से पहले लोगों से मिल मिलाकर और जिस किसी का हक हो उसे अदा करके लोगों से मुआफी तलाफी करके अपने को हज के लिए तैयार कर लेते हैं।

आम तौर से हमारे यहां के हाजी पहले मदीना तैय्यबा पहुंचाये जाते हैं वहां कम से कम चालीस फर्ज़ नामाज़ें पढ़ने का अवसर दिया जाता है, वहां लोग अल्लाह के नबी की मस्जिद में फर्ज़ और नवाफिल पढ़ते हैं, कुर्आन मजीद की तिलावत करते हैं, खूब दुरूद पढ़ते हैं, दुआएं करते हैं, और बार—बार रौज़े पर हाज़िर हो कर अल्लाह के नबी पर सलाम पढ़ते हैं। हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ि0 पर सलाम पढ़ते हैं, उहुद के शहीदों की कब्रों की ज़ियारत करते हैं, जन्नतुल बकीअ़ की ज़ियारत करते हैं, मस्जिदे कुबा जाकर उसमें दो रकअ़त नमाज़ पढ़ आते हैं, इस मदीना मुनव्वरा में अच्छा वक़्त गुजार कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके दोनों साथियों पर सलाम पढ़ कर वहां से प्रबंध के अनुकूल मक्का मुकर्रमा के लिए रवाना होते हैं।

मदीना तैय्यबा से मक्का मुकर्रमा के लिए बस से रवांगी होती है, रवांगी के थोड़ी ही देर बाद ज़ुल हुलैफा पहुंचते हैं इसके बिअ़रे अली भी कहते हैं। यह मदीना मुनव्वरा की ओर से मक्का मुकर्रमा जाने वालों की मीक़ात है, यहां बड़ी अच्छी मस्जिद है और नहाने के लिए बड़ी संख्या में स्नान

घर (गुस्ल खाने) हैं, शौचालय हैं। यहां लोग नहा धो कर एहराम बांधने की तैयारी करते हैं मर्द सिले कपड़े अलग करके एक चादर नीचे बांधते हैं और एक चादर ऊपर ओढ़ते हैं यह एहराम की चादरें कहलाती हैं। औरतें नह धो कर या कम से कम वुजू करके अपने रोज़ के कपड़ों में रहती हैं फिर सब मस्जिद में दो रकअ़तें अलग–अलग नमाज़ पढ़ कर नीयत करते हैं कि ऐ अल्लाह! मैं उमरे की नीयत करता हूं मेरे लिए उमरा करना आसान कर फिर मर्द सर खोल देते हैं और औरतें मुंह खोल देती हैं और औरतें धीरे धीरे से तथा मर्द आवाज़ के साथ "लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्निअ़मत लक वल मुल्क, ला शरीक लक" पढ़ते हैं, चाहिए कि इसे तीन बार पढ़ें। इस नीयत के बाद एहराम की पाबन्दियां शुरु हो जाती हैं। मर्द सिले कपड़े नहीं पहन सकता मोज़े, अण्डर वियर, बनयाइन भी नहीं पहन सकता, सर खुला रखेगा, औरतें चेहरा खुला रखेंगी कोई अजनबी आदमी सामने आ जाए तो पंखे आदि से आड़ ले सकती हैं सुगन्ध नही लगा सकते, कोई जानवर नहीं मार सक़ते, यहां तक कि जुएं और चीलर, मच्छर, मक्खी मारना भी मना है, अलबत्ता सांप बिच्छू मार सकते हैं। नाखून और बाल काटना भी मना है।

औरत अगर माहवारी से हो तो वह भी नहायेगी यद्यपि पाक न होगी परन्तु नहाने का सवाब पायेगी, अगर वह न नहा सके तो वैसे ही नमाज़ पढ़े बगैर, उमरे की नीयत करेगी और लब्बैक पढ़ेगी मगर मसिजद में दाखिल न होगी। ज़ुल हुलैफा से बस रवाना होती है लोग लब्बैक पढ़ते हुए और अल्लाह का ज़िक्र करते हुए मक्के का सफर तय करते हैं। रास्ते में ज़ुह्र, अ़स्र और मग़रिब की नमाज़ें पढ़ेंगे। इशा आमतौर से मक्का मुकर्रमा पहुंच कर पढ़ते हैं।

हज कमेटी के इन्तिजाम में मक्के में ठहरने की जगह नियुक्त होती है, बस वहां तक पहुंचा देती है। हाजी वहां अपनी जगह लेकर और सामान आदि रख कर कोई नहाता है तो कोई सिर्फ वुजू करता है सब इशा पढ़ कर बावजू हरम शरीफ जाते हैं। हरम में दुआ़ पढ़ कर दाखिल होते हैं और काबे पर नज़र पड़ते ही खूब दुआएं करते हैं और लब्बैक पढ़ना अब बन्द कर देते हैं। काबा एक चौकोर इमारत है उसके दक्खिनी पूर्वी कोने पर हजरे अस्वद (काला पत्थर) है। भीड़ में उस तक पहुंचना और उसको देखना कठिन होता है अतः उसकी सीध में हरी बत्ती जला दी गई है, उस हरी बत्ती की सीध में पहुंच कर हाजी लोग काबे को अपने बाएं हाथ पर रख कर तवाफ की नीयत करते हैं, फिर हजर की ओर दोनों हाथ उठा कर अल्लाहु अकबर कह कर तवाफ शुरु कर देते हैं। अगर हजर तक पहुंच हो तो उसको हाथ से छू कर हाथ चूम लेना चाहिए अन्यथा उसकी ओर हाथ उठा देना ही काफी है इसको स्तिलाम कहते हैं। तवाफ शुरु क़रने से पहले अहराम की चादर का दाहिना भाग दाहिने कान्धे के नीचे से निकाल कर बाएं कांधे पर डाल लेना चाहिए इसको इज़्तिबाअ़ कहते हैं, यह सातों चक्करों में मस्नून

(सुन्नत) है। और इस तवाफ के तीन चक्करों में मर्दों के लिए कान्धा हिलाते हुए अकड़—अकड़ कर चलना भी मस्नून है, इसको रमल कहते हैं यह तीन चक्करों में मस्नून है। तवाफ करते वक़्त काबा बाएं हाथ रहता है, तवाफ में खूब दुआएं करनी चाहिए अगर कुर्आन व हदीस की दुआएं याद हैं तो उनको पढ़े, दुरूद शरीफ पढ़ें, कुर्आन मजीद की सूरतें पढ़ें।

तात्पर्य यह है कि तवाफ में अल्लाह की याद में लगे रहें, काबे के दक्खिनी ओर जब पहुंचें तो विशेष कर यह दुआ पढ़ें "रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह़सनतंव, व फ़िल आख़िरति हसनतं० वक़िना अ़ज़ाबन्नार" जब हजरे अस्वद की सीध में पहुंचें तो फिर उसकी ओर हाथ उठा कर स्तिलाम करें। इस प्रकार काबे के सात चक्कर लगाएं, चक्कर लगाते वक़्त काबे के उत्तरी ओर बिना छत के एक घेरा बना है उसको हतीम कहते हैं उसके बाहर ही से चक्कर लगाएं। सातवां चक्कर जब हजर पर पूरा हो जाए तो मताप से बाहर निकल कर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें, यह नमाज़ मक़ामे इब्राहीम में पढ़ी जाती है लेकिन भीड़ की वजह से वहां पढ़ना कठिन होता है। अतः मस्जिद में कहीं भी पढ़ लें। मस्जिद में जगह जगह ज़म—ज़म रखा होता है अब पेट भर के ज़म—ज़म पियें और ख़ूब दुआएं करें, उसके पश्चात काबे पर नज़र डालकर उसके पूर्वी ओर सफा पहाड़ी पर जाएं, वहां चौथा कल्मा पढ़ें अल्लाहु अकबर कहें और शई की नीयत से मरवा पहाड़ी की ओर चलें दोनों के बीच लगभग 600 मीटर का अन्तर है, मरवा की तरफ जाते समय बीच में दो हरे पत्थर मिलते हैं उनपर हरी बत्तियां जलती रहती हैं, उनके बीच मर्दों को दौड़ कर चलना होता है मगर औरतें अपनी चाल ही चलती हैं मरवा पहुंच कर एक चक्कर (शौत) होता है। फिर मरवा से सफा आते हैं तो दो चक्कर हो जाते हैं इस प्रकार सात चक्कर लगाने पड़ते हैं जो मरवा पर पूरे होते हैं। शई में भी खूब दुआएं की जाती हैं। सात चक्कर पूरे हो जाने पर औरतें आपने हाथ से अपनी चोटी से एक अंगुल बाल काट लेती हैं और उनका एहराम खुल जाता है। बाल काटने के लिए औरतों को छोटी सी कैंची साथ रखना चाहिए। मर्द बाहर निकल कर दुकान पर सर मुंडा लेते हैं या कतरवा लेते हैं इस तरह वह भी एहराम से बाहर हो जाते हैं।

जो औरतें माहवारी से होती हैं जब वह नहा कर पाक हो जाती हैं तब अपना उमरा पूरा करती हैं। अब सब लोग अपने ठहरने की जगह पर ठहरते हैं और जितना हो सकता है हरम जाकर वहां नमाज़ें पढ़ते हैं और तवाफ करते हैं। यह सिलसिला सात ज़िलहिज्ज तक जारी रहता है। आठ ज़िलहिज्ज को अब फिर नहा धो कर या कम से कम वुजू करके मर्द एहराम की चादरें पहन लें औरतें अपने कपड़ों में रहें फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ कर नीयत करें कि ऐ अल्लह! मैं हज की नीयत करता हूं हज करना आसान कर फिर मर्द सर खोल कर आवाज़ से तीन बार लब्बैक पढ़ें और औरतें चेहरा खोल कर लब्बैक पढ़ें अब एहराम की पाबन्दियां पहले की तरह शुरु हो गईं। उनका लिहाज़ करें, लड़ाई झगड़ा और बुराइयों से पूरी तरह बचें, एहराम की हालत में मियां बीवी से मिलाप भी वर्जित है।

जो औरतें माहवारी से हों वह भी कम से कम वुजू करके नमाज़ पढ़े बिना हज़ की नीयत करके लब्बैक पढ़ें।

सब लोग एहराम की हालत में 'मिना' जाएं, मिना ले जाने और वहां ठहरने का इन्तिज़ाम मुअल्लिम की तरफ से होता है। वहां जुह्र, अस्र, मग़्रिब, इशा और फज्र पांच नमाजें पढ़ी जाती हैं। पाबन्दी से जमाअ़त से नमाज़ें पढ़ें, खूब लब्बैक पढ़ें और खुब दुआएं करें।

9 ज़िलहिज्ज को मुअ़ल्लिम के इन्तिजाम में अ़रफात के मैदान जाएं, वहां भी ठहरने का इन्तिज़ाम मुअ़ल्लिम की तरफ से होता है।

जब हाजियों ने हज की नीयत की थी और एहराम में दाखिल हुए थे तो वह हज का पहला फर्ज था और अब अ़रफात के मैदान में आना हज का दूसरा फर्ज़ है।

अ़रफात में एक बहुत बड़ी मस्जिद है जिसको मस्जिदे नमिरा कहते हैं। जो लोग इस मस्जिद में पहुंच जाते हैं वह वहां के इमाम के पीछे जुह्र और अस्र की नमाज़ें जमा करके पढ़ते हैं और क़स्र पढ़ते हैं लेकिन 90 प्रतिशत से अधिक लोग नमाज़ें अपने खेमों में पढ़ते हैं बहुत से लोग खेमों में भी जुह्र और अस्र जमा करके पढ़ते हैं। लेकिन आम तौर से हनफी लोग जुह्र के वक्त जुह्र की नमाज़ और अस्र के वक़्त अस्र की नमाज़ अदा करते हैं। याद रहे मिना और अ़रफात दोनों खेमों में पाखाना पेशाब और वुजू करने का अच्छा इन्तिज़ाम रहता है।

अरफात में भी लोग लब्बैक भी पढ़ते हैं और खूब दुआएं करते हैं, पूरा दिन अल्लाह की याद और दुआवों में गुजरता है।

मग़्रिब के वक़्त मग़्रिब की नमाज़ पढ़े बिना मुअ़ल्लिम के इन्तिज़ाम में मुज़दल्फा आते हैं यहां मुअल्लिम की तरफ से ठहरने का कोई इन्तिज़ाम नहीं होता यहां लोग पहुंच कर मग़्रिब और इशा दोनों नमाज़ें जमा करके पढ़ते हैं फिर रात यहीं बिताते हैं। अल्लाह जिसको जैसी तौफीक दे दुरूद और दुआ में मश्गूल रहते हैं।

फज्र की नमाज़ पढ़ कर थोड़ी देर ठहरते हैं फिर मिना वापस आते हैं। मुज़दल्फा से मिना आने का काम बहुत कठिन होता है। भीड़ की वजह से मुअल्लिम की गाड़ियां नहीं चल पाती। मुज़दल्फा से मिना ज़ियादा दूर नहीं है, लोग किसी तरह पहुंच ही जाते हैं देर में सवारियां भी मिल जाती हैं, मिना से चलते वक़्त आमतौर से लोग वहीं से शैतानों को मारने के लिए 49 या उससे अधिक कंकरियां चुन लेते हैं।

मिना पहुंच कर लोग सात–सात कंकरियां लेकर जमरात जाते हैं और जम–रए–अ़क्बा (बड़े शैतान) के पास पहुंच कर लब्बैक कहना बन्द कर देते हैं फिर उस को एक–एक करके सात कंकरियां मारते हैं। कंकरियां मारते वक़्त अल्लाहु अकबर पढ़ते हैं।

जो लोग कमज़ोर होते हैं वह अपनी तरफ से दूसरे को कंकरियां मारने के लिए कह देते हैं और वह अपनी कंकरियां मारने के बाद उनकी कंकरियां भी मार देते हैं। कंकरियां मारने के बाद अपने खेमे में वापस आते हैं और कुर्बानी का प्रबन्ध करते हैं। कुछ लोग कुर्बानी बैंक के द्वारा करवाते हैं। कुर्बानी के बाद सर मंडा लेते हैं या कतरवा लेते हैं।

औरतें अपनी चोटी से एक अंगुल बाल काट लेती हैं या कटवा लेती हैं। अब कुछ लोग नहा धो कर मामूल के कपड़े पहन लेते हैं और कुछ लोग एहराम ही की हालत में हरम जाते हैं अब एहराम की पाबन्दियाँ खत्म हो गई सिवाये बीवी से मिलाप के। हरम में तवाफे जियारत करते हैं, यह हज़ का आखिरी और तीसरा फर्ज़ है इस तवाफ में भी मर्द लोग रमल करते हैं और अगर एहराम की चादरों में हैं तो इज़तिबाअ़ भी करते हैं। उमरे के तवाफ की तरह तवाफ पूरा करके उसी तरह सई की जाती है। उसके बाद फिर मिना के खेमे वापस आ जाते हैं।

ग्यारह ज़िलहिज्ज को जुह्र की नमाज़ पढ़ कर फिर 21 कंकरियां ले कर जमरात जाते हैं और पहले जम–रए–ऊला (छोटे शैतान) को एक–एक करके अल्लाहु अकबर पढ़–पढ़ कर सात कंकरियां मारते हैं फिर थोड़ा हट कर दुआ करते हैं फिर जम–रए–वुस्ता (मंझिले शैतान) को उसी तरह सात कंकरियां मार कर और हट कर दुआ करते हैं, फिर जम–रए–अक़्बा (बड़े शैतान) को उसी तरह सात कंकरियां मारकर खेमा वापस आते हैं, वहां के प्रबन्धकों ने कंकरियां मारने के मार्गों के जो नियम बनाए हैं उनका पालन अनिवार्य है। उनके उल्लंघन में ही दुर्घटनाएं होती हैं और जानें जाती हैं। बारह ज़िलहिज्ज को फिर ज़ुह्र की नमाज़ के बाद जमरात जा कर तीनों शैतानों को ग्यारह की तरह कंकरियां मारते हैं अर्थात रमी करते हैं, बारह जिलहिज्ज को मग़रिब के पहले पहले मिना छोड़ देते हैं, उस दिन भी भीड़ के कारण मुअल्लिम के लिए सवारियों से लाना कठिन होता है। अधिकांश लोग पैदल चल कर या कुछ दूर चलने के बाद सवारी ढूंढ कर मक्का अपने ठहरने की जगह पर आ जाते हैं।

इस तरह हज पूरा हो जाता है। अब घर सफर से पहले ह़रम जाकर तवाफे वदाअ़ करते हैं, यह वाजिब है। फिर ज़म–ज़म और खजूरों के साथ अपने घर वापस आते हैं, अपने लिए और दूसरों के लिए खूब दुआएं करते हैं लोगों को खजूरें खिलाते हैं और ज़म–ज़म पिलाते हैं।

जो लोग देर से जाते हैं हवाई जहाज़ से जद्दा पहुंचाए जाते हैं वह अपने एयरपोर्ट ही पर उमरे का एहराम बांध कर मक्का पहुंच कर उमरा कर के एहराम से बाहर आ जाते हैं और फिर आठ जिलहिज्ज को हज का एहराम बांध कर हज पूरा करते हैं, हज के बाद वह मदीना तैय्यबा पहुंचाए जाते हैं। फिर वहां से फारिग़ हो कर वतन वापस आते हैं।

जो लोग मीक़ात पर हज्जे इसराद अर्थात केवल हज का एहराम बांधते हैं वह मक्का पहुंच कर तवाफे कुदूम, रमल और इज़तिबाअ़ के साथ करते हैं फिर सई करते हैं और फिर एहराम में रहते हुए वहां वक़्त गुजारते हैं और आठ तारीख़ को मिना जाते हैं और हज पूरा करते हैं। उन पर कुर्बानी वाजिब नहीं होती।

जो लोग मीक़ात पर हज्जे क़िरान अर्थात उमरा और हज़ दोनों की नीयत करते हैं वह मक्का मुकर्रमा पहुंच कर पहले उमरा करते हैं मगर सर नहीं मुण्डाते फिर तवाफे कुदूम करते हैं इसमें भी मर्द रमल वह इज़तिबअ़ करते हैं और सई करते हैं, फिर हज्जे इसराद

की तरह एहराम में रहते हुए हज़ पूरा करते हैं।

हज्जे इसराद और हज्जे किरान वाले अगर तवाफे कुदूम के बाद सई कर लेते हैं तो उनको तवाफे ज़ियारत के बाद सई नहीं करना पड़ती है अन्यथा तवाफे ज़ियारत के बाद उनको भी सई करना पड़ती है। तवाफे ज़ियारत अगर दस को न हो सके तो बारह की मगरिब से पहले-पहले अवश्य कर लेना चाहिए।

जो रमी दिन में रह जाए वह रात आने पर रात में कर सकते हैं। औरतें जो माहवारी से हों वह हज की नीयत करेंगी यानी एहराम में आयेंगी। मिना, अरफात, मुज़दलफा जायेंगी, शैतानों को कंकरियां मारेंगी अलबत्ता पाक हुए बिना तवाफे ज़ियारत न कर सकेंगी अगर वह बारह तक माहवारी के सबब नापाक हैं तो पाक हो कर वह बारह के बाद भी तवाफे ज़ियारत कर सकती हैं।

याद रहे कि हज़ कर रहे लोगों पर ईदुल अजहा (बकर ईद) की नमाज़ नहीं है परन्तु 9 जिलहिज्ज की फज्र से 13 जिलहिज्ज की अस्र तक हर फर्ज नमाज़ के सलाम के तुरन्त बाद तकबीरे तशरीक पढ़ना वाजिब है।

तकबीरे तशरीकः-

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा..........

मन्नत मानी कि अगर मैं स्वस्थ हो गया तो अपनी पसंद की चीज़ें छोड़ दूंगा, उनको ऊँट का गोश्त और दूध बहुत पसंद था वह उन्होंने छोड़ दिया, अब इस उम्मत के लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने का आदेश लौट आया और जो चीज़ें उनकी शरीअत में हलाल थीं वे इस उम्मत के लिए भी हलाल हैं।

7. उनसे कहा गया कि तौरेत लाकर दिखाओ अगर तुम सच्चे हो, इस पर उनका मुंह बन गया।

8. जब तुम्हारी बात गलत हुई तो अब इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सही तरीके पर आ जाओ तुम शिर्क करते हो और वे शिर्क से पाक थे बस तुम भी शिर्क छोड़ दो और तौबा कर लो।

9. यहूदियों ने कहा था तुम्हारा इब्राहीम से क्या संबंध वे तो ईराक़ से शाम गए और वहां उन्होंने बैतुल मुक़द्दस का निर्माण किया तुमने उसे छोड़ दिया, उसी का जवाब दिया जा रहा है कि सबसे पहले काबा बना फिर बैतुल मक्दिस, अल्लाह ने उसको शुरु से बरकत व हिदायत का उद्गम बनाया आज भी वह मक़ामे इब्राहीम वहां मौजूद है जिस पर हज़रत इब्राहीम के कदमों के निशान हैं, उस घर को अल्लाह ने क़यामत तक के लिए इस्लाम का केन्द्र और उसके हज़ को अनिवार्य (फर्ज़) किया।

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्रेम संदेशा

"सच्चा राही" आया है
प्रेम संदेशा लाया है
मानव मानव भाई हैं
यह पाठ पढ़ाने आया है

दीने इस्लाम का मिज़ाज और उसकी नुमायां ख़ुसूसियात

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 —अनु0 मु0 हसन अंसारी

नबूवत की इम्तियाज़ी खुसूसियात में चौथी बात यह है कि उनका असल ज़ोर आख़िरत की ज़िन्दगी पर होता है वह इसका इस कसरत से ज़िक्र करते हैं कि यह बात उनकी दावत का मरकज़ी नुकता बन जाती है और साफ़ ज़ेहन के साथ उनके वाक़ियात और अक़वाल का मुतालआ करने वाला साफ़ महसूस करता है कि आख़िरत उनका नसबुलऐन है। यह बात उनकी फ़ितरते सानिया बन जाती है और आख़िरत की फ़िक्र उनको हमेशा बेचैन रखती है।

अंबिया की ईमान बिल आख़िरत की दावत और उसकी तबलीग़ सिर्फ़ इख़्लाक़ी या इस्लामी ज़रूरत के तहत नहीं थी। उनके तरीक़े दावत व तबलीग़ में यह ईमान विजदानी कैफ़ियत और क़ल्बी जज़्बा और दर्दमन्दी के साथ होता है जबकि दूसरे तरीक़े में वह एक ज़ाब्ता और ज़रूरत की हैसियत रखता है।

पाँचवीं बात यह है कि बेशक अल्लाह तआला ही हक़ीक़ी हाकिम है और शरीअत साज़ी सिर्फ़ उसी का हक़ है। उसका इरशाद है:—

तर्जुमा: *"ख़ुदा के सिवा किसी की हुकूमत नहीं है।" (सूरः यूसुफ़—40)*

क्या उनके वह शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुकर्रर किया है जिसका ख़ुदा ने हुक्म नहीं दिया।

(सूरः शूरा—21)

लेकिन दर हक़ीक़त (वास्तव में) ख़ालिक़ व मख़्लूक़ हाकिम व महकूम के तअल्लुक़ से कहीं ज़ियादा वसीअ (विस्तृत), लतीफ़ और नाजुक है। क़ुर्आन मजीद ने अल्लाह तआला के नाम व सिफ़ात को जिस तफ़सील के साथ बयान किया है उसका मक़सद क़तअन (कदापि) यह नहीं मालूम होता कि बन्दे से सिर्फ़ इतना मतलूब है कि वह उसको अपना सब से बड़ा हाकिम समझ ले और उसके साथ किसी को शरीक न करे बल्कि इन नामों और सिफ़ात और उन आयात का जिनमें ख़ुदा से मुहब्बत और तअल्लुक़ और उसके ज़िक्र की तरग़ीब आई है साफ़ तक़ाज़ा यह मालूम होता है कि उससे दिलो जान से मुहब्बत की जाये और उसकी तलब व रज़ा में जान खपा दी जाये उसकी हम्द व सना के गीत गाये जायें उठते बैठते उसके नाम का वज़ीफ़ा पढ़ा जाये उसका ख़ौफ़ हर वक़्त बना रहे उसी के सामने हाथ फ़ैलायें, उसी के जमाल पर हर वक़्त निगाहें जमी रहें। उसी की राह में सब कुछ लुटा देने यहां तक कि सर कटा दने का जज़्बा बेदार रहे।

छठी बात यह है कि अंबियाकिराम अलैहिस्सलाम का मख़्लूक़ से और उन

क़ौमों से जिन की तरफ़ वह भेजे जाते हैं पोस्टमैन जैसा तअल्लुक़ नहीं होता जिसकी ज़िम्मेदारी सिर्फ़ यह है कि वह ख़ुतूत (पत्रों) और डाक पाने वाले तक पहुंचा दे फिर उन लोगों से कोई सरोकार नहीं और उन लोगों को इस चिट्ठी रसां से कोई मतलब नहीं। वह अपने कामों और अख़्तियारात में बिल्कुल आज़ाद हैं। और यह कि क़ौमों का तअल्लुक़ नबियों से सिर्फ़ वक़्ती और कानूनी होता है। यह वह ग़लत और बेबुनियाद ख़याल है जो उन हल्कों में राएज था जो नबूवत के बुलन्द मक़ाम से नावाक़िफ़ थे। और हमारे इस दौर से उन हल्क़ों में फैला हुआ है जो सुन्नत के मक़ाम से नावाक़िफ़ और हदीस के मुनकिर हैं और जिन पर मज़हब के मसीही तसव्वरात का असर और मग़रिब के तर्ज़े फ़िक्र का ग़ल्बा है।

नबी पूरी इन्सानियत के लिए उसवये कामिल, आला क़ाबिले तक़लीद नमूना और इख़लाक़ के बारे में सबसे मुकम्मल और आख़िरी मेआर (कसौटी) होते हैं। उन पर अल्लाह की इनायतें और तजल्लियां होती हैं। उनके इख़लाक़ व आदात और उकनी ज़िन्दगी का तौर तरीक़ा सब ख़ुदा की नज़र में महबूब हैं। नबी जिस रास्ते को अख़्तियार करते हैं वह रास्ता ख़ुदा के यहां महबूब बन जाता है और उसको दूसरे रास्तों पर तरजीह हासिल होती है। उनके रास्ते पर चलना उनके इख़लाक़ की झलक पैदा करना अल्लाह की रज़ा हासिल करने का सरल रास्ता हो जाता है इसलिए दोस्त का दोस्त, दोस्त और दुश्मन का दोस्त दुश्मन, समझा जाता है। कुर्आन मजीद में आता है:—

तर्जुमा: *"ऐ पैग़म्बर! (लोगों से) कह दीजिए कि अगर तुम ख़ुदा को दोस्त रखते हो, तो मेरी पैरवी करो, ख़ुदा भी तुम्हें दोस्त रखेगा, और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।"* *(सूर: आल—ए—इमरान—31)*

इसके बरअक्स (विपरीत) जो ज़ुल्म पर कमर बांधे हुए हैं और कुफ़्र की राह अख़्तियार किये हुए हैं उनकी तरफ़ दिल का मैलान अल्लाह की ग़ैरत को हरकत में लाने वाला है और अल्लाह से बन्दे को दूर करने वाला है, फ़रमाया गया—

तर्जुमा: *"और जो लोग ज़ालिम हैं उनकी तरफ़ मायल न होना, नहीं तो तुम्हें दोज़ख़ की आग आ लपेटेगी, और ख़ुदा के सिवा तुम्हारे और दोस्त नहीं हैं (अगर तुम ज़ालिमों की तरफ़ मायल हो गये) तो फिर तुमको कहीं से मदद न मिल सकेगी।"*

(सूर: हूद—113)

इन पैग़म्बराना मख़सूस आदात व अतवार का नाम शरीअत की ज़बान में "ख़साले फ़ितरत" और "सुननुल्हुदा" है जिसकी शरीअत तालीम व तरग़ीब देती है। इनका इख़्तियार करना लोगों को नबियों के रंग में रंग देना है। और यह वह रंग है जिसके बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है:—

तर्जुमा: *"(कह दो कि हमने) ख़ुदा का रंग अख़्तियार कर लिया और ख़ुदा से बेहतर*

रंग किस का हो सकता है, और हम उसकी इबादत करने वाले हैं।" (सूरः बकरा –138)

एक आदत की दूसरी आदत, एक अख़लाक़ के दूसरे अख़लाक़, एक तौर तरीक़े के दूसरे तौर तरीक़े पर दीन व शरीअत में तरजीह का यही राज़ है, इसी वजह से इसको इस्लामी शरीअत ईमान वालों की पहचान, फ़ितरत के तक़ाज़े की तकमील और इसके ख़िलाफ़ तरीक़ों को जाहिलियत की पहचान क़रार देती है और इन दोनों तरीक़ों और रास्तों में फ़र्क़ यह है कि एक को ख़ुदा के पैग़म्बरों और उसके महबूब बन्दों ने अपनाया दूसरे को उन लोगों ने अपनाया जिनके पास हिदायत की रौशनी और आसमानी तालीमात नहीं हैं। इस उसूल के तहत खाने पीने, कामों में दायें–बायें हाथ का फ़र्क़, लिबास व ज़ीनत, रहन–सहन के बहुत से उसूल आ जाते हैं।

❖❖❖

प्यारे नबी की ....

मुसीबत के वक़्त की दुआः–

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रंज व मुसीबत के समय यह दुआ पढ़ा करते थे– अनुवादः अल्लाह बुजुर्ग बुर्दबार के सिवा कोई माबूद नहीं, अल्लाह बड़े अर्श के मालिक के सिवा कोई माबूद नहीं अल्लाह तआला जमीन व आसमान और इज्जत वाले अर्श के मालिक के सिवा कोई माबूद नहीं।

(बुखारी–मुस्लिम)

बात कहे तो बेहतर कहे वरना खामोश रहेः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो उसको चाहिए कि बात कहे तो बेहतर कहे वरना खामोश रहे। (इस हदीस से साफ जाहिर हो गया कि इंसान को अच्छी बात कहना चाहिए जिस में कोई मस्लिहत हो और जिससे कोई भलाई ज़ाहिर हो और जब भलाई के जाहिर होने में कोई शक हो तो खामोशी बेहतर है इसलिए कि सलामती सिर्फ खामोशी में है।

मुसलमानों में अफजलः–

हज़रत अबू मूसा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया, या रसूलल्लाह मुसलमानों में अफजल कौन है, आपने फरमाया जिस मुसलमान की जुबान और हाथ के शर से लोग महफूज रहें।

(बुखारी–मुस्लिम)

दो जीज़ों की ज़मानतः–

हज़रत सहल बिन सअद रज़ि0 से रिवायत है कि उसामा बिन ज़ैद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स मुझसे इस बात का वादा करले कि मैं अपनी जुबान और शर्मगाह की हिफाजत करूंगा और उसे हराम से बचाऊँगा तो मैं उस के लिए जन्नत की जमानत लेता हूं।

◆◇◆ (बुखारी–मुस्लिम)

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

हज और उमरा से सम्बन्धित कुछ शब्दों तथा स्थानों का परिचय

—मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी —हिन्दी इम्ला: हुसैन अहमद

उमरा: यह एक विशेष उपासना है जो 8,9,10,11 एवं 12 जिलहिज्ज के अतिरिक्त साल में कभी भी मक्का मुकर्रमा पहुंच कर उसके नियमों का पालन करते हुए मस्जिदे हराम और मसआ में की जाती है। इसमें तीन बातें जरूरी होती हैं—

(1) मीकात पर उमरे का एहराम बांधना।

(2) काबे का तवाफ करना।

(3) मसआ में सई करके सर मुण्डाना या कतरवाना।

हज: मक्का मुकर्रमा पहुंच कर नियमों का पालन करते हुए 8 जिलहिज्ज को एहराम के साथ मिना जाना 9 जिलहिज्ज को अरफात जाना फिर रात मुजदल्फा में बिताना 10 को रमी करना कुर्बानी करना फिर रात में काबा पहुंच कर तवाफे जियारत करना फिर 11,12 को नियम पूर्वक रमी करना।

हज तीन प्रकार का होता है—

१. हज्जे इफराद: इस हज में मीकात पर सिर्फ हज का एहराम बांधते हैं और मक्का मुकर्रमा पहुंच कर काबे का तवाफ करते हैं इसको तवाफे कुदूम कहते हैं, सई भी कर सकते हैं यह सई हज की सई समझी जायेगी फिर एहराम ही में रहेंगे यहां तक कि नियमानुसार हज मुकम्मल हो, 10 तारीख को रमी और बाल मुंडवाने के बाद आम कपड़े पहन लेंगे और तवाफे जियारत के बाद एहराम से पूरी तरह बाहर आ जायेंगे। इस हज में कुर्बानी वाजिब नहीं लेकिन अगर करें तो सवाब होगा।

२. हज्जे किरान: इस हज के लिए मीकात पर उमरा और हज का एक साथ एहराम बांधा जाता है फिर मक्का मुकर्रमा पहुंच कर उमरा करते हैं मगर सर मुंडा कर एहराम से बाहर नहीं आते एहराम ही में रहते हैं, फिर 8 जिलहिज्ज को मिना जाते हैं और नियमानुसार 12 जिलहिज्ज तक हज के तमाम काम पूरे करते हैं, इस हज में कुर्बानी वाजिब होती है।

३. हज्जे तमत्तुअ: इस हज में मीकात पर सिर्फ उमरे की नीयत से एहराम बांधते हैं फिर मक्का मुकर्रमा पहुंच कर मस्जिदे हराम में हाजिर हो कर नियमानुसार उमरा करके सर के बाल मुंडा कर या कटवा कर एहराम से बाहर आ जाते हैं और आम कपड़े पहन लेते हैं फिर 8 जिलहिज्ज को हज की नीयत से एहराम बांधते हैं और मिना जाते हैं फिर नियमानुसार 12 जिलहिज्ज तक हज के अरकान पूरे करते हैं, इस हज में भी कुर्बानी वाजिब होती है। हिन्दोस्तान के अक्सर लोग यही हज करते हैं।

मीकात: मीकात का अर्थ नियुक्त समय परन्तु यह हज के बयान का पारिभाषिक शब्द है जिससे तात्पर्य वह स्थान है जहां हज और उमरा करने वाले एहराम बांधे बिना मक्का मुकर्रमा नहीं जा सकते अगर चले जायेंगे तो उन को दम देना पड़ेगा, मक्का के चारों ओर

मीकात के स्थान नियुक्त हैं जो निम्नलिखित हैं:—

१. यलमलम: यह हिन्दोस्तानी और यमनी हाजियों की मीकात है यमन की ओर से आने वाले तमाम हाजियों की मीकात है। हिन्दोस्तान के हाजी जब पानी के जहाज से हज को जाते थे तो जद्दा से पहले यलमलम आता था लेकिन अब नहीं आता इसलिए कि हवाई जहाज़ कर्नुल मनाजिल की सीध से गुजरता है।

२. जुलहुलैफा: यह मदीना तय्यिबा की ओर से आने वाले हाजियों की मीकात है।

३. अलजहफा: यह मिस्र और शाम की ओर से आने वाले हाजियों की मीकात है।

४. कर्नुल मनाजिल: यह एक पहाड़ी है जो मक्का मुकर्रमा से लगभग 50 किलो मीटर पूरब में स्थित है यह नज्द की ओर से आने वाले हाहिजयों की मीकात है।

५. जाते इर्क: यह मक्का मुकर्रमा से लगभग 64 किलो मीटर दूरी पर इराक़ के रास्ते पर स्थित है और इराक तथा उस ओर से आने वाले हाजियों की मीकात है।

हवाई जहाज के सफर में इन मीकातों की सीध का सही अन्दाजा कठिन है इसलिए हवाई जहाज़ से मक्का मुकर्रमा आने वाले हाजियों को चाहिए कि वह अपने एयरपोर्ट पर एहराम बांध लें या मीकात की सीध पर पहुंचने से पहले ही एहराम बांध लें यह मीकातें आफाकियों की हैं।

आफाकी: यह पाँचों मीकातों और उनकी सीध से बाहर रहने वाले आफाक़ी कहलाते हैं।

हरम: आमतौर से काबा शरीफ और इसके गिर्द हुई मस्जिद को हरम कहते हैं लेकिन हरम उस हिस्से को कहते हैं जो हरम के सीमाओं के भीतर है।

हुदूदे हरम: मक्का मुकर्रमा के चारों ओर हरम की सीमाएं निर्धारित हैं उनको हुदूदे हरम कहते हैं उनके अन्दर गैर मुस्लिमों का प्रवेश निषिद्ध है हुदूदे हरम में रहने वाले अर्थात मक्का मुकर्रमा के रहने वाले "हरमी" कहलाते हैं।

हरमी हजरात की मीकात: हरम के लोगों की हज की मीकात हरम है, लेकिन उनके उमरे की मीकात "हिल्ल" है।

हिल्ल: पाँचों मीकातों और उनकी सीमाओं तथा हुदूदे हरम के बीच का भाग हिल्ल कहलाता है, हिल्ल के रहने वाले हिल्ली कहलाते हैं, हिल्ली हज़रात की मीकात हिल्ल है।

काबा शरीफ: मस्जिदे हराम के बीच में खुले आगन में एक चौकोर छत दार कमरा जैसी ऊँची इमारत है इसकी दीवारों पर रेशमी काला पर्दा पड़ा होता है पर्दे पर जगह जगह कुर्आन की आयतें लिखी होती हैं।

हतीम: काबे की इमारत से मिला हुआ उत्तरी ओर एक बे छत का घेरा है, यह भी काबे का भाग कहलाता है।

हजरे अस्वद: (काला पत्थर) यह एक बा बरकत गड्ढे दार काला पत्थर है जो काबे के पूर्वी कोने में जड़ा हुआ है इस पत्थर को बहुत से अगले नबियों ने और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने छुआ या चूमा है तमाम हाजी तवाफ में इसको छूते या चूमते या मजबूरी दर्जे पर उसकी ओर हाथों से इशारा करते हैं।

बाबे काबा: काबे की इमारत के पूर्वी ओर एक दरवाजा है जो खासी ऊँचाई पर है इसको बाबे काबा कहते हैं, यह सोने का है।

मुलतज़म: यह हजरे अस्वद और बाबे काबा के बीच का भाग है हाजी लोग इससे लिपट कर अल्लाह से दुआएं मांगते हैं।

मीज़ाब: यह काबे की छत का परनाला है जो हतीम की तरफ लगा हुआ है, यह भी सोने का है।

काबे की इमारत के पूर्वी कोने को, रुक्ने हजरे अस्वद उत्तरी कोने को रुक्ने इराकी, पश्चिमी कोने को रुक्ने शामी और दक्खिनी कोने को रुक्ने यमानी कहते हैं।

ज़म ज़म: यह हजरे अस्वद से पूरब एक पानी का पवित्र स्रोत है जिस को अल्लाह तआला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और उनकी माँ हाजर के लिए जारी किया था अब यह अण्डर ग्राउण्ड है और इसका पानी मशीनों द्वारा मस्जिद से बाहर निकाल दिया गया है, इसमें इतनी बरकत है कि लाखों हाजी पीते और अपने घर ले जाते हैं और यह बराबर जारी रहता है।

मक़ामे इब्राहीम: काबे से पूरब की ओर एक पत्थर शीशे के घेरे में रखा है उस पत्थर पर दो कदमों के निशान बने हैं कहते हैं कि इसी पत्थर पर खड़े हो कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम काबे की दीवारें बनाई थीं इस पत्थर के आस पास और इसके पीछे का भाग मकामे इब्राहीम कहलाता है।

सफा व मरवा: यह काबे से पूरब मस्जिदे हराम से मिली हुई दो पहाड़ियाँ हैं अब पहाड़ियाँ खत्म हो गई हैं लेकिन उनके चिन्ह बाकी हैं, सफा दक्खिन ओर है ओर मरवा उत्तर ओर दोनों के बीच आज कल लगभग 600 मीटर का फर्क है।

मसआ: सफा और मरवा के बीच का भाग मसआ कहलाता है इसमें हाजी लोग सई करते हैं अब यह दो मंजिला छत दार इमारत है।

मीलैन अख्ज़रैन: यह दो हरे पत्थर हैं जो मसआ में लगे हैं, सई करते वक्त मर्द लोग इसमें दौड़ कर चलते हैं।

मताफ: काबे के गिर्द तवाफ (चक्कर लगाने) करने की जो खुली जगह है उसको मताफ कहते हैं।

मिना: मक्का मुकर्रमा से पूरब की ओर लग भग 5 किलो मीटर दूरी पर एक जगह है।

जमरात: यह मिना ही में तीन जगहें हैं जो अब दीवार की शक्ल में तीन मंजिला बना दी गई हैं इनको 10, 11, और 12 को हाजी लोग कंकरियां मारते हैं इनमें से जो मक्के से करीब है उस को बड़ा शैतान और उसके बाद वाले को मंझला शैतान और उसके बाद वाले को छोटा शैतान भी कहते हैं।

अरफ़ात: मक्का मुकर्रमा से पूरब की तरफ लगभग 21 किलो मीटर की दूरी पर एक लम्बा चौड़ा मैदान है। 9 जिलहिज्ज को तमाम हाजियों के लिए इसमें पहुंचना फर्ज (अनिवार्य) है।

मुज़दल्फ़ा: मिना और अरफ़ात के बीच में एक लम्बी चौड़ी वादी है हाजी लोग 9, 10 जिलहिज्ज की बीच की रात यहां बिताते हैं।

तवाफ: निर्धारित नियम से काबे के गिर्द सात चक्कर लगाने को तवाफ कहते हैं।

सई: निर्धारित नियम से सफा और मरवा के बीच सात चक्कर लगाने को सई कहते हैं।

रमी: निर्धारित नियम से मिना के जमरात (शैतानों) को कंकरियां मारने को रमी करना कहते हैं।

इस्तिलाम: हजरे अस्वद को चूमने या छूने या मजबूरी दर्जे पर उस की ओर दोनों हाथ उठाने को इस्तिलाम कहते हैं।

रमल: शाने हिला हिला कर छोटे छोटे कदम रख कर तन तन कर चलना इस को रमल कहते हैं, जिस तवाफ के बाद सई हो उस तवाफ के तीन चक्करों में मर्दों के लिए रमल मसनून है।

इजतिबाअ: एहराम की चादर का दाहिना भाग दाहिने बगल के नीचे से निकाल कर बायें शाने पर (कांधे) पर डालना और दाहिना शाना खुला रखना इसको इजतिबाअ़ कहते हैं, जिस तवाफ के बाद सई हो उस तवाफ के सातों चक्करों में इजतिबाअ़ मर्दों के लिए मसनून है जब कि तवाफ करने वाला एहराम की चादरों में हो।

मस्जिदे खैफ: मिना में यह एक बहुत बड़ी मस्जिद है जिसको मस्जिदे खैफ कहते हैं।

मस्जिदे नमिरा: अरफात के मैदान के एक किनारे पर बनी हुई बहुत बड़ी मस्जिद है इसके पीछे का कुछ भाग अरफात की सीमा से बाहर है।

जन्नतुल मुअल्ला: मक्का मुकर्रमा के कब्रिस्तान को जन्नतुल मुअल्ला कहते हैं।

जन्नतुल बकीअ: मदीना मुनव्वरा के कब्रिस्तान को जन्नतुल बक़ीअ़ कहते हैं।

उहुद: मदीना मुनव्वरा के एक पहाड़ का नाम है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत प्रिय था उसी के दामन में उहुद के सत्तर शहीदों की कबरें हैं उन्हीं में सय्यिदुश्शुहदा हमजा रज़ि0 भी हैं।

मस्जिदे कुबा: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मक्का मुकर्रमा से मदीना तय्यिबा हिजरत करके गये तो मदीना से कुछ दूर ठहरे वहां मस्जिद बन गई नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसमें नमाज़ पढ़ी।

मस्जिदे किबलतैन: यह मदीना तय्यिबा की वह मस्जिद है जिसमें पहले किबला बैतुल मक़दिस की ओर मुंह करके नमाज़ हो रही थी कि अवाज दी गई कि किबला काबा हो गया नमाज़ ही की हालत में लोगों ने काबे की तरफ रुख कर लिया इस तरह इस मस्जिद का नाम मस्जिदे किबलतैन (दो किबलों वाली मस्जिद) पड़ गया।

उमरा तथा हज से संबन्धित महत्वपूर्ण जानकारियाँ:-

उमरा:-

(1) एहरामे उमरा मीक़ात पर। (शर्त)

(2) तवाफ मए रमल तथा इजतिबाअ़ (रुक्न)

(3) सई करना (वाजिब)

(4) सर मुण्डाना या कतरवाना। (वाजिब)

हज्जे इफराद:-

(1) एहरामे उमरा मीक़ात पर। (शर्त)

(2) तवाफे कुदूम। (सुन्नत)
(3) वकूफे अरफा। (रुक्न)
(4) वकूफे मुजदलफा। (वाजिब)
(5) रमी जम–रए–अक़्बा
10 जिलहिज्ज को। (वाजिब)।
(6) कुर्बानी। (इख़्तियारी)
(7) सर मुण्डाना या कतरवाना। (वाजिब)
(8) तवाफे ज़ियारत। (रुक्न)
(9) सई करना। (वाजिब)
(10) रमीये जिमार अर्थात तीनों शैतानों को 11,12 जिलहिज्ज को कंकरियां मारना। (वाजिब)
(11) तवाफे वदाअ़। (वाजिब)

नोटः- जो काम शर्त या रुक्न हैं वह फर्ज हैं।

अगर तवाफे कुदूम के बाद सई कर ली है तो तवाफे जियारत के बाद सई न करेंगे।

हज्जे क़िरानः-

(1) एहराम तथा उमरा। (मीकात पर) शर्त।
(2) तवाफे उमरा मए रमल तथा इजतिबा। (रुक्न)
(3) उमरे की सई। (वाजिब)
(4) तवाफे कुदूम मए रमल तथा इज़्तिबा। (सुन्नत)
(5) सई करना। (वाजिब)
(6) वकूफे अ़रफा। (रुक्न)
(7) वकूफे मुज़दल्फा। (वाजिब)
(8) 10 जिलहिज्ज को जम–रए–अक़्बा की रमी। (वाजिब)
(9) कुर्बानी। (वाजिब)
(10) सर मुण्डाना या कतरवाना। (वाजिब)
(11) तवाफे ज़ियारत। (रुक्न)
(12) 11,12 जिलहिज्ज को तीनों जमरात (शैतानों) को कंकरियां मारना अर्थात रमीये जिमार। (वाजिब)
(13) तवाफे वदाअ़। (वाजिब)

नोटः- अगर तवाफे कुदूम के बाद सई नहीं कर सके हैं तो तवाफे ज़ियारत के बाद सई करना अनिवार्य होगा। इस हज में उमरे की सई के बाद सर नहीं मुण्डाते हैं।

हज्जे तमत्तुअः-

(1) एहरामे उमरा मीक़ात पर। (शर्त)
(2) तवाफे उमरा मए रमल तथा इज़तिबाअ़ (रुक्न)
(3) उमरे की सई। (वाजिब)
(4) सर मुण्डाना या कतरवाना। (वाजिब)
(5) आठवीं ज़िलहिज्ज को हज का एहराम बांधना। (शर्त)
(6) वकूफे अ़रफा। (रुक्न)
(7) वकूफे मुजदलफा। (वाजिब)
(8) 10 जिलहिज्ज को रमी जम–रए–अक़्बा। (वाजिब)
(9) कुर्बानी। (वाजिब)
(10) सर मुण्डाना या कतरवाना। (वाजिब)
(11) तवाफे ज़ियारत। (रुक्न)
(12) सई करना। (वाजिब)
(13) 11,12 जिलहिज्ज को रमीये जिमार अर्थात तीनों शैतानों को कंकरियां मारना। (वाजिब)

नोटः- रमल और इज़तिबाअ़ केवल मर्दों के लिए सुन्नत है। जो काम शर्त या रुक्न हैं वह फर्ज हैं। याद रहे वाजिब छूटने पर दम देने से उस का बदल हो जाता है लेकिन फर्ज छूटने पर उसका बदल नहीं अतः कोई भी गलती हो तो आलिम से उसका हल पूछें।

-सवाब पायें-

जो युवक भलीभांति हिन्दी पढ़ लेते हैं उनको "सच्चा राही" पढ़ने का परामर्श दें और सवाब पायें।

धन्यवाद

हाजी अब्दुल्लाह के हज का रोमांचक वृत्तांत

—इदारा

यह उस समय की बात है जब चाँदी का रूपया चलता था, शाकिर नाम के एक सज्जन जो सिलाई का काम करते थे वह क़सबा रूदौली में रहते थे, उनका छोटा सा परिवार था, मियां बीवी और एक बेटा, सिलाई से अच्छी आय होती थी, आय अधिक खर्च कम प्रति दिन बचत हो जाती अच्छे खासे पैसे जमा हो गये थे जिस की जानकारी मियां बीवी को थी लड़का कुछ न जानता था। लड़का जिस का नाम अब्दुल्लाह था 20 वर्ष का हो चुका था। वह भी बाप से सीख कर सिलाई के काम में निपुण हो गया था, अल्लाह की मरज़ी, एक रोज किसी हादिसे (दुर्घटना) में शाकिर का देहान्त हो गया, माँ बेटे पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा, परन्तु अब तो इस दुख को झेलना ही था। अल्लाह ने सब्र की तौफीक़ दी कुछ दिनों पश्चात हालात नारमल हो गये, लड़का सिलाई करता अच्छे ढंग से गुज़र बसर हो रहा था, माँ के पास ख़ासी रक़म जमा थी, अब बेटे की शादी करना चाहती थी इसी चिन्ता में थी कि हज के सफ़र का ज़माना क़रीब आ गया, एक दिन माँ ने बेटे से एकांत में कहा, बेटे अब तुम्हारी शादी होना है, पैसे हमारे पास पर्याप्त हैं मगर मैं सोचती हूं कि हम दोनों हज कर आएं फिर लौट कर तुम्हारी शादी हो, अब्दुल्लाह ने कहा अम्मा आप का ख्याल बहुत ही अच्छा और मुबारक है, हज की तैयारी की जाय अतएव हज की तैयारियां होने लगीं अब्दुल्लाह ने हज का तरीक़ा सीखा, रिश्तेदारों में भी खबर फैल गई कि अब्दुल्लाह माँ बेटे हज को जा रहे हैं, माँ ने चुपके से हज के खर्च के रूपये अलग किये और अब्दुल्लाह की शादी के रूपये अलग करके घर के किसी भाग में सुरक्षित कर दिये।

अब्दुल्लाह की माँ रोज़ हज वाले रूपये गिन्ती थी अचानक उसके मन में खोट आ गया, जब हज के सफ़र का वक़्त बिल्कुल क़रीब हुआ तो एक दिन बेटे से कहा, बेटे हज में तो बड़े पैसे खर्च होंगे, पता नहीं तुम्हारी शादी के लिए पैसे बचें कि न बचें इसलिए यह मेरा इरादा बदल गया है। मैं अभी हज पर न जाऊँगी, तुम्हारी शादी के पश्चात सोचा जाएगा, अब्दुल्लाह ने कहा अम्मा यह क्या गज़ब करती हो आप हज का इरादा न बदलिये, शादी के पैसों की परवाह न कीजिए, सिलाई से मेरी अच्छी आय है आप भी तो ज़नाने कपड़े सिल कर खासा कमा लेती हैं, परन्तु माँ के मन में जो खोट आ चुका था वह तो अपने पैसों को लल्चा गई थीं, उन्होंने दो टूक यह फैसला सुनाया, नहीं—नहीं, अभी मैं हज को न जाऊँगी तुम्हारी शादी के पश्चात देखा जाएगा।

माँ के इस फैसले से अब्दुल्लाह के दिल पर बड़ी चोट लगी परन्तु उसने माँ

का आदर किया और चुप हो गया, रात को इशा की नमाज़ पढ़ कर माँ बेटे सो गये, फ़ज्र में जब माँ नमाज़ पढ़ कर उठी तो अब्दुल्लाह अपने बिस्तर पर न था, माँ ने सोचा कि आज कुछ पहले मस्जिद चला गया होगा, मगर सूरज निकल आया अब्दुल्लाह मस्जिद से घर न आया, दिन चढ़ गया अब भी अब्दुल्लाह न आया अब माँ चिन्तित हुई पड़ोसियों से कहा देखो मेरा अब्दुल्लाह कहां है, पड़ोसियों ने पता लगाया मगर अब्दुल्लाह का पता न लगा, अब तो माँ ने रोना शुरुअ़ कर दिया, रिश्तेदारों को मालूम हुआ सब दोड़े आए, अब्दुल्लाह के मामूं आए बहन को ढारस दिलाई और अब्दुल्लाह को बहुत तलाश किया मगर अब्दुल्लाह का पता न चला, अब्दुल्लाह के मामूं बहन के घर रहने लगे और अब्दुल्लाह का रोज़ाना पता लगाते मगर अब्दुल्लाह का कहीं पता न चला, माँ रो रो कर बेहाल हो गई मगर अब सब्र के सिवा चारा ही क्या था, अब्दुल्लाह के मामू ने फैसला लिया कि वह बहन के साथ रहेंगे, उनका घर उनके लड़के संभाल लेंगे। अब्दुल्लाह के मामू भी सिलाई का काम करते थे वह अब्दुल्लाह की मशीन पर बैठने लगे और अब भाई बहन गुज़र करने लगे।

अगले वर्ष जब हज की तैयारियों का जमाना आया तो महल्ले के एक साहिब अब्दुलग़फ़ूर नामी हज को तैयार हुए तो अब्दुल्लाह की माँ की आँखों में आंसू आ गये और सोचा कि क्या अच्छा होता कि मैं पिछले साल हज को गई होती कहीं ऐसा तो नहीं है कि हज का इरादा बदलने की मुझ को यह सज़ा मिली हो, लेकिन अब पछताने से क्या फ़ाइदा?

उस वक्त यहां के सारे हाजी पानी के जहाज से हज को जाया करते थे, अब्दुलग़फ़ूर साहिब भी किराची पहुंच कर पानी के जहाज से हज को गये और ख़ैर व आफ़ीयत के साथ मक्का मुकर्रमा पहुंच गये, और अल्लाह की मदद से ठीक से हज अदा किया, हज के पश्चात मदीना मुनव्वरा में अल्लाह के नबी की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने और नबी सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम की मुबारक कब्र की ज़ियारत को गये, वहां एक रोज़ अब्दुल्लाह से मुलाक़ात हो गई दोनों एक दूसरे से लिपट गये अब्दुल्लाह तो खूब रोए हाजी अब्दुल ग़फ़ूर के भी आँसूं बह रहे थे।

जब कुछ सुकून हुआ तो अब्दुल्लाह ने अपनी माँ का हाल पूछा, हाजी ग़फ़ूर ने बताया कि तुम्हारी मां महीनों तुम्हारी याद में रोई सब्र किया और अब तुम्हारे मामू के साथ रह रही हैं मगर बराबर दुखी रहती हैं, अब तुम अपना हाल बताओ कि यहां कैसे पहुंचे?

अब्दुल्लाह ने ढन्डी सांस ली और बोला, हाजी साहिब जब मेरी माँ ने हज का इरादा करके फिर हज से इन्कार किया तो मैं पागल सा हो गया मगर अल्लाह ने मदद की मैंने अपना हाल छुपा लिया, और उसी रात, रात के अंधेरे में मक्का मुकर्रमा के इरादे से चल दिया, अल्लाह ने मदद की

आधी राते से अस्र तक चलता रहा बस नमाज़ के वक़्तों में नमाज़ पढ़ लेता और भूख प्यास पर कुछ खा पी लेता, मैंने अपनी सिलाई के कुछ पैसे अलग रख लिये थे वह साथ ले लिये थे, मगरिब के वक्त एक ऐसे गांव पहुंचा जहां मस्जिद थी मैं मस्जिद में ठहर गया एक साहिब ने मुसाफिर समझ कर खाना खिलाया और सुब्ह को नाश्ता भी कराया, सुब्ह को मैं फिर चला अब चूंकि घर से काफी दूर हो चुका था इसलिए अब कोई पढ़ा लिखा मुसलमान मिलता तो उसको अपना इरादा बता कर रास्ते की रहनुमाई चाहता, वह शख्स मेरी हिम्मत की दाद देता और रहनुमाई करता याद नहीं कितने दिनों बाद ऐसे इलाके में पहुंचा, जहां के लोगों की ज़बान मैं नहीं समझ पा रहा था, हज, रास्ता, मक्का, मदीना जैसे शब्दों से काम चल जाता था और मुझे रहनुमाई मिल जाती रास्ते में कई जगह ऐसा हुआ कि किसी मुस्लिम टेलर की दुकान पर पहुंच कर इशारों से बताता कि मैं भी टेलर हूं और फिर हज, सफर लफ़्ज़ों से समझा लेता कि मैं मक्के जा रहा हूं, थोड़े दिन आपके यहां ठहर कर सिलाई करके कुछ सफर का खर्च चाहता हूं, वह खुशी से मुझे ठहरा कर काम दे देता इस तरह रास्ते में मैं बहुत सी जगहों पर हफ्ता दो हफ्ता ठहर कर और कुछ पैसे जमा करके आगे बढ़ता रहा कहीं कहीं मुझे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा मैं उसे बयान नहीं करना चाहता, इस तरह सफ़र करते करते मक्का मुकर्रमा पहुंचा तो मालूम हुआ कि जीक़ादा का महीना शुरुअ़ हुआ है, एक टेलर की दुकान पर गया अल्लाह की बड़ी मदद हुई वहां एक हिन्दुस्तानी साहब मिल गये उनसे अपना हाल बता कर सिलाई का काम चाहा उन्होंने खुशी से मेरे लिए काम निकाल दिया मैंने उनकी दुकान से एक महीने में अच्छा खासा कमा लिया। हां यह बताना भूल गया कि जब मैंने किसी बस्ती में ईद की नमाज़ पढ़ी थी उसी रोज़ उमरे का एहराम बांध लिया था कि पता नहीं मैं कब मीक़ात पार करूं, मक्का मुकर्रमा पहुंच कर मैंने पहले उमरा किया उसके पश्चात उस टेलर की दुकान पर गया था।

7 जिलहिज्ज तक मेरे पास खासे पैसे जमा हो गये थे 8 जिलहिज्ज को मैंने हज का एहराम बांधा और अल्लाह की मदद से हज किया कुर्बानी भी की ।ऊँट की सवारी से मदीना तय्यबा आया, यहां मैं रोज़ आना अल्लाह के नबी की मस्जिद में नमाज़ें पढ़ता हूं और रौज़े पर सलाम भी पढ़ता हूं, यहाँ भी मुझे सिलाई का काम मिल गया है अब मैं महीना दो महीना काम करके किराया दे कर पानी के जहाज़ से घर आऊँगा इन्शाअल्लाह।

हाजी अब्दुल ग़फ़ूर यह आश्चर्यजनक बाते सुन कर हैरान रह गये, मगर उनको इस बात की खुशी थी कि वह घर पहुंच कर अब्दुल्लाह की मां को यह शुभ सूचना सुनाएंगे।

शेष पृष्ठ......24...पर...

अल्लाह का महान वरदान "पानी"

—इमाम अबु हामिद गजाली (रह0) —हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

पवित्र कुर्आन में है अल्लाह तआला सूचित करते हैं "और हमने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई, तो क्या वे मानते नहीं"?

(अल अंबियाः30)

दूसरे स्थान पर अल्लाह तआला कहते हैं "कि पस उगाये हमने उससे (पानी से) बाग रौनक वाले, तुमको यह ताक़त न थी कि उनके दरखतों को उगाते, क्या है कोई माबूद अल्लाह तआला के साथ? बल्कि यह लोग हैं जो फिर जाते हैं"।

(अन्नम्लः 60)

ध्यान दीजिए कि अल्लाह तआला ने मीठा पानी पैदा कर के अपने बन्दों पर कैसा उपकार किया और धरती पर जीवधारियों तथा वनस्पतियों के जीवन का पानी ही को साधन बनाया। पानी मानव जाति के लिए इतना मूल्यवान है कि अगर मनुष्य प्यासा हो प्रन्तु पानी से वह रोक दिया जाये तो वह पानी पानी के लिए दुन्या के सारे खजाने देने को तैयार हो जाये बड़े आश्चर्य की बात है कि लोग इस बहुमूल्य वरदान से अचेत हैं।

ध्यान दीजिए की पानी मानवजाति के लिए इतना मूल्यवान है कि इसके बिना वह जीवित नही रह सकते फिर भी पानी बड़ी सरलता से मुफ़्त में मिल जाता है, यदि पानी के प्राप्ति पर प्रतिबन्ध लग जाये तो सृष्टि का जीवन असम्भव हो जाये, फिर पानी की तरलता तथा कोमलता को भी देखिए वह बड़ी सरलता से जमीन में प्रवेश करके उसका भाग बन जाता है और वनस्पतियों तथा पेड़ पौधों की जड़ें उससे अपना आहार प्राप्त करती हैं, तथा सूरज की गर्मी के सहयोग से वह अपनी कोमलता के कारण वृक्षों की डालों पर तथा उनकी पत्तियों तक पहुंचता है यद्यपि उसकी प्रकृति नीचे जाने की है और चुंकि उसका पीना भी मनुष्य के लिए आवश्यक था ताकि आहार तरल हो कर शरीर में प्रवेश करे इसलिए पीने वाले के लिए पानी में निर्माता में विशेष स्वाद रखा जिससे पानी पीने वाले को विशेष आनन्द मिलता है ताकि मनुष्य सरलता से पानी पिये और उसका लाभ पाये।

अल्लाह ने पानी में यह विशेषता पैदा की कि वह शरीर तथा कपड़ों के मैल कुचैल को साफ कर देता है, पानी की सहायता ही से भवनों का निर्माण होता है और बहुत से दूसरे काम पानी के द्वारा ही होते हैं।

पानी की सहायता से शुष्क वस्तुओं को तरल बना कर सरलता से पिया जाता है, पानी से आग भी बुझाई जाती है। अगर मनुष्य के गले के अन्दर फन्दा लग जाये तो पानी ही की सहायता से वह फन्दा खुलता है, मनुष्य यदि खूब थक गया हो तो पानी पीने से उसको आनन्द मिलता है, पानी ही से खाने पकाये जाते हैं और बहुत सी ऐसी चीजें पानी द्वारा प्रयोग के योग्य होती हैं जो शुष्क प्रयोग में नहीं आ सकतीं।

तात्पर्य यह है कि मनुष्य की समस्त आवश्यकताएं पानी ही से पूरी होती हैं, यह अल्लाह की दया तथा कृपा है कि ऐसा महान वरदान बिना मूल्य तथा सरलता से प्रयाप्त होता है यदि इस पर प्रतिबन्ध लग जाता तो मानव जीवन के लाले पड़ जाते। अल्लाह तआला ने सृष्टि के पालन पोषण हेतु पानी को हर ओर फैला दिया, क्या जीवधारी क्या वनस्पतियां और क्या खनिज पदार्थ सब को अल्लाह ने अपनी कृपा से पानी से लाभ पहुंचाया।

यह पानी जो हर एक को सरलता से प्राप्त है ऐसी बहुमूल्य वस्तु है जिसके समक्ष संसार की दूसरी वस्तुएं कोई मान नहीं रखती हैं। पानी शुष्क धरती को पार करके उसमें पेड़ पौधे उगा कर उसको हरा भरा कर देता है तथा फूल–फल देता है, यदि पानी न हो तो मानव का अन्त हो जाये तथा संसार जलभुन कर समाप्त हो जाये। गर्मी के तपते दिनों में जब पानी की कमी पड़ती है तो दुन्या उसको तरसती है, उसकी उम्मीद में तड़पती है।

पृथ्वी सूखे से तड़पती है, हर तरफ धूल उड़ती और हरियाली को निगाह तरसती है, फिर जब पानी बादल बन कर झूम–झूम कर दुन्या पर छाता है और बरसता है तो दम के दम में सूखे मैदानों को जल थल कर देता है मनुष्यों की आशाओं को पूरा करता है और हरे वस्तु के लिए जीवन का सन्देश लाता है तभी तो अल्लाह तआला ने बताया है कि "हर वस्तु पानी से जीवित है"।

❖❖❖

हाजी अब्दुल्लाह के..........

हाजी हब्दुल ग़फ़ूर मदीना मुनव्वरा से जब रवाना हुए तो अब्दुल्लाह ने आंसुओं के साथ उनको अलवदाअ़ कहा और अपनी माँ के लिए कुछ उपहार साथ कर दिये और कहा मेरी माँ माँमूं और महल्ले के सब लोगों से मेरा सलाम कहिऐगा।

हाजी अब्दुल ग़फ़ूर जब वतन वापस आए और अब्दुल्लाह की माँ को यह शुभ सूचना सुनाई तो माँ की आँखों से खुशी के आंसू टपकने लगे और आसमान की ओर मुंह करके बोली या अल्लाह मैं जिन्दा रही तो हज ज़रूर करूंगी, मुझे हज करने की तौफीक़ दे दीजिए।

दो माह बाद अब्दुल्लाह भी उपहारों के साथ अपनी मां से आ मिले क्या उस वक़्त की माँ की खुशी शब्दों में बयान की जा सकती है? कदापि नहीं।

अब माँ बेटे फिर साथ रहने लगे एक दिन माँ ने कहा बेटा अब्दुल्लाह मैंने तुम्हारी शादी तुम्हारे मांमू की लड़की से करने का इरादा किया है, और अगले साल हम दोनों हज को चलेंगे, इन्शाअल्लाह, और अगर तुम चाहो तो तुम्हारी बीवी भी साथ चलेगी। पैसे कम नहीं हैं। अब्दुल्लाह बहुत खुश हुए अगले ही महीने अब्दुल्लाह का निकाह हुआ रुख़सती हुई वलीमा हुआ और अगले हज के मौक़े पर तीनों हज को गये, और हज व ज़ियारत से फारिग हो कर ख़ैर व आफ़ीयत से अपने घर वापस आए। ◆◆

(उर्दू पद्य हिन्दी लिपि में)

क़ितआत

—इदारा

बन के ताजिर, अहले मग़रिब, हिन्द में दाख़िल हुए।
हम भी ना समझी से उनकी, अक़्ल के क़ाइल हुए।।
छूट दी उनको जो हमने, उनका जादू चल गया।
थोड़े ही अरसे में वह तो हिन्द के हाकिम हुए।।

कोशिशें जो हमने की, रब की मदद शामिल हुई।
जब हुई रब की मदद, आजादी फिर हासिल हुई।।
शुक्र रब का हम करें, इस नेअमते आजादी पर।
जब भी ना शुक्री हुई, कोई बला नाज़िल हुई।।

नफ्सी-नफ्सी हैं यहां, गो मुल्क यह अजाद है।
नीचे से ऊपर तलक याँ, हर कोई नाशाद है।।
कोई रोटी मांगता है, कोई दौलत माँगता ।
माँगने वालों से अपना, मुल्क यह आबाद है।।

हिन्द फिर इक बार देखो, आलमी बाजार है।
हिन्द हो आलम की मण्डी, चाहती सरकार है।।
बाहरी सरमायाः कारी, दिख रही है हर तरफ।
साफ लगता है कि यह तो, धोखे का व्यापार है।।

स्वतन्त्रता दिवस

यह पन्द्रह अगस्त है
प्रसन्न हर एक व्यक्ति है
ध्वज देश का लहरा रहा
हर व्यक्ति गान गा रहा
इस पन्द्रह अगस्त को
उन्नीस, चार, सप्त को
देश यह स्वतन्त्र हुआ
राजलोक तन्त्र हुआ
सब लग गये विकास में
विकास के प्रयास में
ज्ञान और विज्ञान में
स्वतंत्रता के ध्यान में
पारस्परिक प्रेम में
सुख चैन कुशल क्षेम में
हर मार्ग के निर्माण में
घर द्वार के निर्माण में
स्कूल और कॉलेज बढ़े
और विश्वविद्यालय बढ़े
हर ओर अस्पताल हैं
निर्धन भी यां निहाल हैं
यां योजना हर ओर है
अब रात नही भोर है
भारत स्वतन्त्र देश है
प्यारा यह क्या स्वदेश है।

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः कुछ अहले खैर हज़रात (दानी लोग) चाहते हैं कि ज़कात की रकम से मकानात बना दिये जायें फिर वह मकानात गरीब मुसलमानों को दे दिये जायें, क्या ऐसा करने से ज़कात अदा हो जायेगी?

उत्तरः ज़कात की रकम से ग़रीब मुसलमानो के लिए मकानात बनाना और फिर उन मकानात को गरीब मुसलमानों को दे देना दुरुस्त है, इससे ज़कात अदा हो जायेगी। ज़कात की रकम से ग़रीब मुसलमानों के लिए मकानात बना कर ग़रीब मुसलमानों को दे देना जाइज है इससे ज़कात अदा हो जायेगी।

प्रश्नः गैर मुस्लिम गरीबों को ज़कात की रकम देना दुरुस्त है या नहीं? गैर मुस्लिम बे घर लोगों के लिए अगर ज़कात की रकम से मकानात बना कर उनको दे दिये जायें तो ज़कात अदा होगी या नहीं?

उत्तरः ज़कात की अदायगी एक इबादत है और ज़रूरी है कि ज़कात की रकम ग़रीब मुसलमानों को दी जाये, हदीस में है कि "ज़कात मुस्लिम मालदारों से ली जाये और मुस्लिम फकीरों को दे दी जाये"।

(बुखारी हदीस का मफहूम)

लिहाजा ज़कात की रकम गैर मुस्लिमों को देना दुरुस्त नहीं इसी तरह ज़कात की रकम से मकान बना कर गैर मुस्लिमों को देना दुरुस्त नहीं, ग़रीब गैर मुस्लिमों की मदद नफ्ली सद्क़ात से करना चाहिए इसी तरह ग़रीब बे घर गैर मुस्लिमों के लिए नफ्ली सद्क़ात से मकान बनवाना जाइज है।

प्रश्नः ज़कात की रकम से ग़रीब बच्चियों की शादी करना दुरुस्त है या नहीं? आजकल कुछ तन्जीमें (संगठन) इसी मक़्सद से काइम होती हैं, वह ज़कात जमा करती हैं और ग़रीब बच्चियों की शादियां उस रक़म से कराती हैं, क्या यह दुरुस्त है?

उत्तरः ज़कात वसूल करने वाली तन्जीमें अगर ज़कात की रकम ग़रीब बच्चियों या उनके अवलिया (अभिभावकों) को शादी के लिए दे दें, वह उन रकमों को शादियों में खर्च करें तो यह दुरुस्त है इससे ज़कात अदा हो जायेगी।

प्रश्नः एक सय्यिद साहब पर बड़ा कर्ज है उनके एक मालदार दोस्त ज़कात की रकम से उन का कर्ज अदा करना चाहते हैं, क्या इस तरह उनकी ज़कात अदा हो जायेगी?

उत्तरः अगर ज़कात की रक़म से किसी सय्यिद का कर्ज अदा किया जायेगा तो कर्ज तो अदा हो जायेगा मगर ज़कात अदा न होगी, मालदार साहिब को चाहिए कि ज़कात ऐसे ग़रीब मुसलमानों को दें जो सय्यिद न हों और सय्यिद साहब का कर्ज नफ़्ली सद्कात या दूसरी रकमों से अदा करें। "सादात बनू हाशिम को ज़कात नहीं दी जायेगी, इसी तरह नज़्र और उश्र की रकम सादात को नहीं दी जायेगी, बल्कि नफ़्ली सद्क़ात और अतीया की रकम उन पर खर्च की जायेगी"।

(फतावा हिन्दीया: 1/189)

प्रश्न: तलबा की वह अन्जुमनें (संघ) जो उनकी तक्रीरी और तहरीरी सलाहियतों को प्रवान चढ़ाने के लिए काइम की जाती हैं, उनको ज़कात की रकम दी जा सकती है या नहीं?

उत्तर: जो अन्जुमन ज़कात की रक़म सही जगह खर्च करने का इन्तिजाम करे उसको ज़कात की रकम दी जा सकती है, मतलब यह है कि अगर अन्जुमन के अरकान ज़कात की रकम गरीब मुस्लिम तलबा की जरूरियात पर खर्च करें तो उनको ज़कात दी जा सकती है।

प्रश्न: चन्द मुसलमानों ने तिब्बी इम्दाद के लिए एक फण्ड काइम किया है, इस फण्ड में ज़कात की रकमें जमा की जाती हैं, ताकि मरीजों की तिब्बी इम्दाद की जाये, क्या इस फण्ड में ज़कात की रक़म दी जा सकती है? तिब्बी इम्दाद में दवा, चेकअप और दूसरे खर्चे शामिल हैं।

उत्तर: अगर मुस्लिम गरीब मरीजों की तिब्बी मदद उस फण्ड से की जाती हो तो उस फण्ड में ज़कात की रकम दी जा सकती है और ज़कात अदा हो जायेगी, ज़कात की अदायगी के लिए जकात की रकम ही मुस्तिहिक़ को देना जरूरी नहीं, बल्कि ज़कात की रकम से ग़रीब मुस्लिम मरीज के लिए दवा या दूसरी तिब्बी सहूलियात फराहम की जा सकती हैं "ज़कात में जो चीज़ वाजिब हो, उसके बदले दूसरी चीज़ दी जा सकती है, जैसे रकम के बदले नापी जाने वाली चीज़ या तौली जाने वाली चीज़ या दूसरी चीज़ें दी जा सकती हैं"।

(मबसूत लिस्सरखसी: 1203)

प्रश्न: अगर किसी दवाखाने के मालिक साहिबे निसाब हों, वह अपनी ज़कात के बदले ग़रीब मुसमानों को बे दाम लिए दवायें दे दें तो क्या इससे ज़कात अदा हो जायेगी?

उत्तर: अगर ग़रीब मुसलमानों को ज़कात की रकम के बदले में ज़कात की रकम की कीमत की दवायें दे दें तो ज़कात अदा हो जायेगी।

प्रश्न: ज़कात की रकम रिफाहे आम (लोकहित) के कामों में खर्च की जा सकती है या नहीं? जैसे कुआं बनवा देना हैण्ड पाइप लगा देना या पंचायत घर बनवा देना आदि?

उत्तर: रिफाहे आम में ज़कात की रकम खर्च करना दुरुस्त नहीं है अलबत्ता अगर ग़रीब मुसलमानों को ज़कात की रकम दे दी जाये और वह अपनी तरफ से कुआं, हैण्ड पाइप, पंचायत घर आदि बनाने में वह रकम खर्च करें तो यह दुरुस्त है।

(फतावा हिन्दीया: 2/473)

प्रश्न: अगर किसी के पास माल हो और रमज़ान में उसकी ज़कात अदा कर दी वह माल मालिक के पास बचा रहा तो क्या अगले रमजान में फिर उस पर ज़कात देना होगी? मिसाल के तौर पर औरतों में अपने जेवरात की ज़क़ात रमजान में अदा कर दी तो क्या अगले रमजान में उन जेवरात की ज़क़ात फिर देना होगी?

उत्तर: माल चाहे पहले का ही क्यों न हो अगर वह निसाब भर का है तो साल गुज़रने पर उस पर हर साल ज़क़ात देना होगी, इसी तरह जेवरात अगर निसाब भर के हैं तो उन पर हर साल ज़कात होगी। हदीस में है कि "हर साल माल पर (निसाब भर के माल पर)

ज़कात वाजिब होगी जिस माल पर साल पूरा हो जाये"।

(जामे तिर्मिजी: हदीस 631)

प्रश्न: अगर कोई शख्स ज़कात अदा करने की तारीख से तीन माह कब्ल किसी गरीब मुसलमान की बेटी की शादी में कुछ रकम ज़कात की नीयत से खर्च कर दी तो क्या पेशगी के तौर पर ज़कात अदा हो जायेगी?

उत्तर: ज़क़ात पेशगी तौर पर साल पूरा होने से पहले भी अदा की जा सकती है। इसलिए गरीब मुसलमान को ज़कात की नीयत से जो रकम दे दी वह ज़कात में शुमार होगी और ज़कात अदा हो जायेगी। हदीस में हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि "नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हजरते अब्बास रज़ि0 से एक साल पेशगी ज़कात वसूल ली थी"।

(जामे तिर्मिजी: हदीस 679)

प्रश्न: अगर कोई शख्स जो साहिबे निसाब हो वह किसी गरीब मुसलमान को कर्ज दे लेकिन वह गरीब कर्ज लौटा न सके ऐसी सूरत में कर्ज देने वाला अपनी ज़कात की रकम मकरूज को यह कह कर दे कि इसको कर्ज की अदायगी में लौटा देना और वह लौटा भी दे मगर खुश दिली से न लौटाये तो क्या इस तरह उसकी ज़कात अदा हो जायेगी?

उत्तर: इस तरह भी ज़क़ात अदा हो जायेगी इसलिए कि ज़कात की अदायगी के लिए ज़कात की रकम का किसी गरीब मुसलमान को मालिक बनाना जरूरी है, पूछे गये सवाल में गरीब मुसलमान को ज़कात की रकम का मालिक बना दिया गया इसलिए ज़कात अदा हो गई रही बात कर्ज की अदायगी की तो चाहे उसने खुश दिली से अदा किया हो या मुतालबे पर नागवारी से अदा किया हो कर्ज भी अदा हो जायेगा। हदीस शरीफ में हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि "नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गोश्त लाया गया तो मैंने कहा कि यह बरीरा रज़ि0 के लिए सद्के में आया है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि यह बरीरा के लिए सद्का है और (उनकी तरफ से) मेरे लिए हदीया है"।

(सहीह बुखारी हदीस: 1493)

प्रश्न: अगर ज़कात की रक़म के बजाये उस रकम से गरीब मुसलमानों को खाने पीने का सामान या दवा वगैरा दे दी जाये तो क्या ज़कात अदा हो जायेगी?

उत्तर: ज़क़ात की रक़म नक्द देना ही जरूरी नहीं है, अगर ज़कात की रकम से गरीब मुसलमान की जरूरत का सामान खरीद कर या दवा वगैरा खरीद कर उस सामान या दवा का गरीब मुसलमान को मालिक बना दिया जाये तो भी ज़कात अदा हो जायेगी।

(रद्दुल मुहतार: 3/283)

प्रश्न: अगर कोई साहिबे निसाब शख्स, रमजान में अपने माल की ज़कात निकाल कर गरीब मुसलमानों में तक्सीम करता है लेकिन ज़कात की कुछ रकम बचा लेता है ताकि अगले महीने में गरीब मुसलमानों की मदद में खर्च कर सके फिर वह अगले महीनों में गरीब मुसलमानों पर वह रकम खर्च कर देता है तो क्या ऐसी सूरत में उसकी ज़कात अदा हो जायेगी?

शेष पृष्ठ ......35...पर...

भारत दासता की बेड़ियों से स्वतंत्रता की दहलीज तक

(संक्षिप्त झलकियों के आइने में) —इं0 जावेद इक़बाल

15 अगस्त सन् 2016, आज भारत को आज़ाद हुए 69 साल हो गए, यह हमारा 70वाँ जश्ने आज़ादी है। जो खुशी और जो उमंग हम बूढ़ों ने अपने बचपन में इस दिन को जश्ने आज़ादी के रूप में मनाते हुए अपने बड़ों के जीवन में देखी थी, वह सच्ची खुशी आज की नई नस्ल में कहीं देखने को नहीं मिलती। हक़ीकत में आज़ादी के महत्व को वह क्या जाने जिसने कभी ग़ुलामी देखी न हो। भूख और प्यास की शिद्दत को वह क्या समझे जिसने हमेशा विलासता में ही जीवन गुज़ारा हो।

अंग्रेज पहले पहल भारत में व्यापर के मक़सद से आए थे, सम्भवतः उस समय यहां राज करने का कोई इरादा न हो, मगर सन् 1707 में औरंगज़ेब के स्वर्गवास के बाद जब मुग़ल शासन का पतन होना आरम्भ हो गया तो उन्होंने भी व्यापारिक गतिविधियों से आगे बढ़ कर राजनीति के क्षेत्र में क़दम बढ़ाने शुरु कर दिये। क्योंकि प्रत्येक सूबे में नवाबो और राजाओं ने अपनी अपनी हुकूमतें बना ली थीं इसलिए उनमें आपसी जंगें होना स्वाभाविक था। अंग्रेजों ने इस परिस्थिति का लाभ उठाया और एक एक करके सभी प्रान्तों पर अधिकार जमा लिया। ऐसा नहीं है कि इसके लिए उन्हें कहीं विरोध का सामना न करना पड़ा हो। पूरे मुल्क में, प्रानत स्तर पर उन्हें बड़ी बड़ी जंगें लड़नी पड़ीं, मगर उच्च स्तरीय हथियारों, माहिर जंगी सलाहकारों जैसे लार्ड डलहौज़ी, लार्ड क्लाइव की "फूट डालो राज करो" की नीतियों के सहारे उनको विजय मिलती चली गई। अंग्रेज़ों को मिलने वाली कामयाबी में स्वयं भारतीय गद्दारों के द्वारा उन्हें दी जाने वाली गुप्त सूचनायें बड़ा महत्व रखती थीं।

कर्नाटक, बंगालेश, बिहार, उड़ीसा, रूहैल खण्ड इत्यादि में अपनी विजय के झंडे लहराते हुए जब अंग्रेज़ों ने दक्षिणी भारत पर क़ब्ज़ा करना चाहा तो वहां उन्हें टीपू सुल्तान के पिता हैदर अली से जबर्दस्त टक्कर लेनी पड़ी 29 मार्च 1769 को अंग्रेज़ों को हार का मुंह देखना पड़ा। तब उन्होंने अपनी नीति बदली और महाराष्ट्र के मराठा और हैद्राबाद के नवाबों से सांठ गांठ करके मैसूर पर फिर से हमला कर दिया इस बार 1782 ई0 में अंग्रेज़ों से लड़ते हुए हैदर अली शहीद हो गए। जंग का मोर्चा तुरन्त ही हैदर अली के बेटे टीपू ने संभाल लिया। और अंग्रेजों की शर्मनाक हार हुई। फिर भी समय समय पर अंग्रेज़ षड़यंत्र रचते रहे, टीपू की पूरी ज़िन्दगी जंग के मैदान में गुज़री आख़िर सन् 1799 में जंग के मैदान में टीपू की फ़ौज के एक ग़द्दार सिपाही की मुख़बरी के नतीजे में वह शहीद हो गए। एक शुभ चिन्तक ने टीपू से कहा था कि यदि आप हथियार डाल कर अंग्रेजों की शरण में चले जायें तो जान बच सकती

है। यह सुन कर क्रोध भाव से टीपू ने जा कहा था वह हमेशा के लिए इतिहास के पन्नों में सुरक्षित हो गया। टीपू ने कहा था– *"मैं शेर की एक दिन की ज़िन्दगी को गीदड़ की सौ साल की ज़िन्दगी से अच्छा समझता हूँ।"*

इस तरह हम देखते हैं कि अंग्रेजों को अपने पूरे शासन काल में आरम्भ से ही पूरे मुल्क में कड़े विरोध का सामना करना पड़ा था। यह विरोध अधिकांशतः मुसलमानों की ओर से ही था जो स्वाभाविक भी था, क्योंकि उस ज़माने में भारत पर मुसलमानों की हुकूमत थी तो मुसलमान ही उनके मुख्य विरोधी थे।

शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी के द्वारा वर्ष 1818 में फ़ौजी आन्दोलन शुरु किया गया जिसमें सैय्यद अहमद शहीद और मौलाना इस्माईल शहीद ने भारत को अंग्रेज़ी शासन से मुक्त कराने की योजना बनाई। इसके लिए उन्होंने भारत के उत्तर–पश्चिम के सरहदी इलाक़े को अपना केन्द्र बनाया क्योंकि वही उस समय दुशमन से आज़ाद इलाक़ा था। मगर बीच में पहले उन्हें सिखों से युद्ध करना पड़ा जिसमें मुसलमानों की हार हुई और वर्ष 1831 में बाला कोट की जंग में लगभग 1500 वीर मुसलमानों के साथ वे शहीद हो गए।

इधर दिल्ली के सिंहासन पर वर्ष 1937 में मुग़ल वंश के बहादुर शाह नाम मात्र के बादशाह बने, जिनकी बादशाहत बस लालकिले के अन्दर तक थी और हक़ीक़त में सत्ता तो पूरी तरह अंग्रेजों के हाथ में जा चुकी थी। वर्ष 1857 में मेरठ छावनी के फ़ौजियों ने जब बग़ावत की तो बहादुर शाह ज़फ़र का भारत का सम्राट स्वीकार करके उनके नेतृत्व में जंग शुरु कर दी मगर योजना बद्ध तरीक़े से विभिन्न मोर्चों पर ताल मेल न होने के कारण विजय अंग्रेज़ों की ही हुई। और सज़ा के रूप में क्रूरता का ऐसा नंगा नाच देखने को मिला कि आज भी उस मंजर की कल्पना से रूह कांप जाती है। यह लड़ाई मुख्यतः मुसलमानों के द्वारा बहादुर शाह ज़फ़र के नुतृत्व में लड़ी गई थी। इसलिए सज़ा भी इन्हीं को मिली। बादशाह के बेटों की हत्या करके उनके सर थाल में सजा कर बादशाह के पास भेजे गए और बादशाह को काला पानी की सज़ा सुना कर रंगून भेज दिया गया। वहीं पर 1862 में बड़ी दयनीय स्थिति में उनकी मृत्यु हुई। वतन की महब्बत और अपनी मजबूरी को बादशाह ने इस तरह बयान किया था–

कितना है बदनसीब ज़फ़र दफ़्न के लिए
दो गज़ ज़मीं भी मिल न सकी कूए यार में।

इसके अलावा हज़ारों उलमा और विद्वानों का क़त्ले आम करके लाशें पेड़ों पर लटका दीं। दिल्ली की सड़कें स्वतंत्रता सेनानियों के खून से लाल हो गई थीं। यह भारत की पहली जंगे आज़ादी थी (स्वतंत्रता संग्राम था) जिसे अंग्रेज़ों ने छल कपट से जीता था और उन्होंने इसे बग़ावत का नाम दिया।

अंग्रेज़ों ने अब समझ लिया था कि जब तक हिन्दू मुसलमानों में एकता रहेगी तब तक वे शान्ति से यहां राज नहीं कर सकेंगे। तब उन्होंने भारतवासियों के बीच फूट डालने की योजनायें बनाई। सबसे पहले इस मक़सद के लिए उन्हें एक

सर फिरा जाहिल मुसलमान मिला जो पंजाब के शहर अमृतसर के पास क़ादयान इलाक़े का रहने वाला था, उसका नाम ग़ुलाम अहमद था जो बाद में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी के नाम से मशहूर हुआ सन् 1871 ई0 में इस व्यक्ति को अंग्रेज़ों ने मुसलमानों में फूट डालने और उनके ईमान पर डाका डालने के लिए प्रयोग किया। दूसरा काम सन् 1885 ई0 में एक अंग्रेज़ नौकरशाह एलन आकटविन ह्यूम (Allen Octarian Hume) के द्वारा इण्डियन नैशनल कांग्रेस की बुनियाद डाल कर किया।

A.O. Hume ने जनरल सेक्रेट्री का कार्यभार संभाला और वोमेश चन्द्र बनरजी को अध्यक्ष चुना जो कि एक बंगाली थे। सन् 1906 तक आम लोगों के लिए कांग्रेस की सदस्यता के दरवाज़े बंद थे। उस समय तक केवल 72 सदस्य थे जिनका काम जनता की समस्याओं से सरकार को अवगत कराना था। इनमें अधिकांश हिन्दू थे। जैसे लाला लाजपत राय, बिपिन चन्द्र पाल, चिम्बरम पिल्ले, आरोबिन्दो घोष, बाल गंगा धर तिलक, मुहम्मद अली जिनाह आदि। सर सैय्यद अहमद खां जैसे दार्शिकों ने इस पर आपत्ति भी जताई थी। मगर हिन्दू वादी अधिकारों के सामने मुस्लिम हितो पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। इसी कारण दिसम्बर 1906 में कांग्रेस को मुसलमानों के लिए अनुपयुक्त मान कर मुहम्मद अली जिनाह आग़ा खां, सैयद आमिर अली, सर मियां मुहम्मद शफ़ी, सर सैय्यद अहमद खां आदि ने "आल इण्डिया मुस्लिम लीग" की बुनियाद रखी। इस तरह भारत में हिन्दू मुस्लिम एकता में दरार डालने की अंग्रेजों की नीति को सफलता मिलनी शुरु हो गई। वर्ष 1914 में पंडित मदन मोहन मालविया तथा लाला लाजपत राय ने प्रान्तीय स्तर पर पंजाब में "हिन्दू महा सभा" की स्थापना की जिसने वर्ष 1925 में अखिल भारतीय हिन्दू महा सभा का रूप ले लिया। तथा इस का सम्बन्ध राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से हो गया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना भी वर्ष 1925 में डॉ0 केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा नागपुर में हुई थी इन दोनों का मुख्य एजेण्डा हिन्दु समाज को संगठित करना तथा मुसलमानों का शुद्धिकरण करना था। इन्हीं सब कारणों से हिन्दू मुसलमानों के बीच दूरियां बढ़ती गईं और मुहम्मद अली जिन्ना जैसा राजनैतिक जो 1937 तक देश के बंटवारे का घोर विरोधी था, 1940 में बंटवारे का पक्षधर बन गया। इस तब्दीली की वजह जानने के लिए जब हम मौलाना आज़ाद की पुस्तक 'इण्डिया विन्स फ्रीडम' के वह 30 पन्ने पढ़ते हैं जो उनकी मृत्यु के 30 वर्ष बाद प्रकाशित हुए थे, तो पता चलता है कि कांग्रेस पार्टी ने अनेक अवसरों पर मुस्लिम लीग से किए हुए समझौतों का उलंघन किया था। तथा बाल गंगाधर तिलक जैसे कुछ कांग्रेसी सदस्य भी बंटवारे की बात करने लगे थे, क्योंकि वे सत्ता में मुसलमानों की उचित अनुपात में भागीदारी के पक्षधर नहीं थे।

शेष अगले पृष्ठ पर..

मानवता का संदेश

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी

मानवता की रक्षा कर हम, विश्व शन्ति दिखलायेंगे। प्रेम, अहिंसा, भाई चारा, का हम पाठ पढ़ायेंगे।।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई एक पंक्ति में आयेंगे। मानवता के अच्छे गुण हम, एक साथ मिल गायेंगे।।
ऋषि, मुनी और वलियों ने तो, प्रेम का पाठ पढ़ाया है। अनुयाई हम उनके हैं, हम प्रेम का पाठ पढ़ायेंगे।।
हिन्द में जीना, हिन्द में मरना, हिन्द में कब्र बनाना है। हिन्द में हमने जन्म लिया है हिन्द का गुण हम गायेंगे।।
सोने की चिड़िया की रक्षा, मिल जुल कर हम करते हैं। आंच वतन पर आई अगर, तो ज्वाला मुखी जलायेंगे।।
धर्म अलग है जाति अलग है, फिर भी भाई चारा है। मानवता की रक्षा की हम, मिल जुल ज्योति जलायेंगे।।
मानव सेवा धर्म की रक्षा, हम सब का यह नारा है। हम सब भारत वासी हैं, दुनिया को सीख सिखायेंगे।।
मानव रक्षा देश की रक्षा, यह संकल्प हमारा है। बाधक बना अगर कोई तो, उसको सबक़ सिखायेंगे।।
सिद्दीक़ी गुण गान गा रहा, मानवता की रक्षा का। एक साथ मिल कदम बढ़ायें विश्व शान्ति दिखलायेंगे।

दूसरी ओर हिन्दू संगठनों की ओर से भी बंटवारे को देश में शान्ति के लिए ज़रूरी बताया जा रहा था।

इन परिस्थितियों में स्वाभाविक था कि मुस्लिम लीग ने भी बंटवारे के पक्ष में अपनी नीति बदल ली। जो कि दूरदर्शिता के प्रतिकूल थी इसे एक बड़ी ग़लती कहा जाना उचित ही है।

अंग्रेज़ों की तो यही इच्छा थी, इस के लिए तो वे 1857 के बाद से ही योजनाबद्ध तरीक़े पर काम कर रहे थे। ब्रिटेन ने 1946 में भारत को आज़ाद करते समय स्वतंत्र शासन का मार्गदर्शन करने के लिए "कैबिनेट मिशन प्लान" प्रस्तुत किया, दोनों ने स्वीकार किया ,मगर बाद में कांग्रेस ने जब यह कहा कि लोक सभा में बहुमत के आधार पर वह इसमें जब चाहे परिवर्तन कर सकती है, क्योंकि कांग्रेस देश में एक मज़बूत केन्द्रीय सरकार चाहती है। इस पर मुस्लिम लीग ने घोर आपत्ति की और तुरन्त ही अलग देश पाकिस्तान की मांग रख दी।

अतः इस पूरे मंज़रनामे पर ग़ौर करने से पता चलता है कि देश के बंटवारे का इल्ज़ाम पूर्ण रूप से मुसलमानों पर डालना अनुचित है। इसके लिए अंग्रेज़ों ने उसी समय प्लानिंग कर ली थी जब पहली जंगे आज़ादी में बहादुर शाह ज़फ़र के नेतृत्व में पूरे भारत का संगठित होते देख लिया था।

❖❖❖

शिक्षा का महत्व

—मुहम्मद निज़ामुद्दीन

शिक्षा प्राचीनकाल से ही रुचि का विषय रही है क्योंकि मनुष्य का जन्म एक जैविक प्राणी स्वरूप जिज्ञासु प्रवृत्ति के प्राणी के रूप में रहा है। शिक्षा का तात्पर्य सभी प्रकार के ज्ञान के संग्रह तथा मानव के चहुमुखी विकास से लिया जाता है। फिलिप्स कहते हैं "शिक्षा वह संस्था है जिसका केन्द्रीय तत्व ज्ञान का संग्रह है।" शिक्षा में पुरानी पीढ़ी द्वारा अपने ज्ञान को नई पीढ़ी में हस्तांतरित करने के लिए प्रयास किया जाता है। यह एक सामाजिक व्यवस्था है जो व्यक्ति को उसके समाज से एकबद्ध करने और संस्कृति को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाजशास्त्र की रुचि शिक्षा के अध्ययन में विशेष रूप से रही है विशेषतः इसके सामाजिक स्वरूप में समाजशास्त्री मुख्य रूप से शिक्षा पर सामाजिक स्थितियों के प्रभाव, शिक्षा की प्रकृति और सामाजिक परिवर्तनों में शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य समाज को बनाए रखना एवं व्यक्तियों के व्यक्तित्व को विकसित करना है। शिक्षा समाज में अज्ञान को दूर करती है एवं विभिन्न संस्कृतियों एवं रुचियों के लोगों में समझ का विकास कर उनमें व्याप्त भ्रम को दूर करती है। पारसंस स्कूल को समाजीकरण को केन्द्रीय मानते हैं जो परिवार एवं समाज के बीच कड़ी का कार्य करती है इसी तरह डेविस एवं मूर शिक्षा को सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रिया का अंग मानते हैं।

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के उपकरण का कार्यकरती है आधुनिक शिक्षा लोगों की कट्टरता, रूढ़िवादिता, जड़ता जैसे दृष्टिकोण का तार्किकता दूरदर्शिता एवं गतिशीलता में परिवर्तित कर देती है। लोगों की सोच एवं दृष्टिकोण में होने वाला यह परिवर्तन समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना में भी परिवर्तन कर देता है। आधुनिक शिक्षा ने नई परिष्कृत एवं अत्यधिक प्रभावशाली तकनीक के द्वारा मानवजाति को सेवा का एक नया विशाल अध्याय लिखा है।

सर्व शिक्षा अभियान

पिछले चार दर्शकों से प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए एवं संविधान के अध्यादेश को पूरा करने के लिए बहुत कठिन श्रम किया गया है। 1986 और 1992 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इस तत्व को प्राथमिकता दी गयी। आज इस समय शिक्षा को मूल अधिकार के रूप में स्वीकार कर 6–14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान लागू कर दिया गया है। इसके लिए विविधवत एक क़ानून बनाया गया है।

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत 2010 तक 6–14 वर्ष के आयु वर्ग के सभी बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा

दिये जाने का प्रावधान है। साथ ही इसका दूसरा लक्ष्य है कि स्कूल व्यवस्थापन में समुदाय की सक्रिय सहभागिता लेना और उससे ब्रिज स्कूल खोलना तथा क्षेत्रीय एवं लैंगिक असमानता को कम करना। सर्व शिक्षा अभियान के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए निम्न उद्देश्य रखे गये हैं।

(1) 2003 तक सभी बच्चों को स्कूल में दाख़िल किया जाए।

(2) 2007 तक सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा मिल जानी चाहिए।

(3) 2010 तक सभी बच्चों को आठ वर्ष की प्रारंभिक शिक्षा पूरी हो जानी चाहिए।

शिक्षा का निजीकरण

शिक्षा एक कल्याणकारी राज्य का राष्ट्रीय उद्देश्य है यह सरकार का कर्तव्य है कि वह देश के प्रत्येक नागरिक के लिए शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करे। अब शिक्षा का अधिकार मूल अधिकार बन गया है एवं उदारीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से इसमें भी विदेशी विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति प्रदान की जाने लगी है। इसका तात्पर्य यह होगा कि शिक्षण संस्थाओं का प्रशासन एवं प्रबंधन पूर्णतया व्यक्तिगत उद्यमियों या निजी संस्थाओं के हाथ में हो इससे शिक्षा के सर्वव्यापीकरण करने एवं गुणवत्ता सुधारने में मदद मिलेगी। इस प्रकार यह कहा जा सक़ता है कि अब सभी बच्चों को जो 06–14 वर्ष के हो गये हैं उनको शिक्षा दिलाना राज्य के कर्तव्य के साथ–साथ यह माता–पिता का भी कर्तव्य बना दिया गया है।

अत: निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में साक्षर और शाक्षरता अभियान के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा की भी आवश्यकता है ताकि स्वरोजगार एवं रोजगार में मदद मिल सके। देश का सर्वांगीण विकास तब ही संभव है जब शिक्षा रूपी दीप हर घर में जले। शिक्षा का प्रकाश घरों को उजियारा करे। बिहार सरकार ने इस दिशा में रचनात्मक कार्य किया है। मुख्यमंत्री बालक/बालिका सायकिल योजना से काफ़ी बच्चे विद्यालय की ओर आने लगे हैं।

वर्तमान सर्वेक्षण के आधार पर 99 प्रतिशत बच्चे स्कूल आते हैं। मात्र एक प्रतिशत अभी स्कूल से दूर हैं। उन्हें भी विद्यालय लाने हेतु मुख्यमंत्री बालक/बालिका पोशाक योजना के माध्यम से भी बच्चे की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। केन्द्र सरकार द्वारा मध्याह्न भोजन योजना भी सराहनीय क़दम है। यह कार्यक्रम भी बच्चों को विद्यालय लाने में सहायक है।

प्रथम श्रेणी से उत्तीण मैट्रिक के सभी कोटि छात्र–छात्रा को 10000/– रूपये दिया जाता है जो उच्च शिक्षा ग्रहण करने के मार्ग को सरल बनाता है, वहीं द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण छात्र–छात्रा को 8000/– रूपये भी दिया जाता है। उच्च शिक्षा हेतु बैंक से ऋण लेने की सुविधा भी निर्धन छात्र–छात्रा के लिए लाभदायक सिद्ध होता है, भारत साक्षर मिशन द्वारा अनपढ़ महिलाओं को पढ़ना–लिखना सिखाया जा रहा है तथा यह कहा जा रहा है कि "पढ़ी लिखी बहिना

घर की गहना'' किसी विद्वान ने ठीक ही कहा कि बच्चे की प्रथम शिक्षिका माँ ही होती है।''

'हुनर' कार्यक्रम के तहत तालीमी मर्कज़ क़ायम कर महिलाओं को सिलाई, बुनाई, कताई का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। शिक्षा जीवन से मरण तक प्राप्त करने की अनोखी क्रिया है। शिक्षा से ही अंधकार को समाप्त कर प्रकाश फैलाया जा सकता है। शिक्षित मानव ही भ्रष्टाचार, घूसख़ोरी, दहेज प्रथा, भ्रूण–हत्या जैसे ग़लत रीति–रिवाज को समाप्त कर सकता है। अतः शिक्षा से ही हम अपने परिवार, गाँव, राज्य देश को विकास के मार्ग पर अग्रसर कर सकते हैं बिना शिक्षा के मानव ऐसा है जैसे बिना सुगंध का पुष्प। अतएव हमें शिक्षित मानव बन कर समाज से कुरीतियों को मिटाना पड़ेगा। तभी हमारे समाज का वातावरण स्वच्छ हो सकता है।

(कान्ति जून 2016 से ग्रहीत)

◆◇◆

आपके प्रश्नों..........

उत्तर: ज़कात का मक़सद गरीब मुसलमानों की जरूरतें पूरी करना है और यह जरूरतें रमजान और दूसरे महीनों में भी पेश आती रहती हैं लिहाजा ज़कात की रकम रमजान और गैर रमजान में भी खर्च की जा सकती है।

(अल बहरुर्राइक: 2/368)

प्रश्न: आम तौर से लोग रमजान में ज़कात निकालते हैं अगर किसी के माल पर रमजान से 6 माह पहले ज़कात फर्ज हो जाये तो क्या वह उसी वक्त अदा करे या रोके रखे रमजान में अदा करे?

उत्तर: जब कोई अमल फर्ज हो जाये तो उस की अदायगी में देर करना मुनासिब नहीं एक शख्स जब निसाब का मालिक हो गया और उस पर साल पूरा हो गया तो उसको चाहिए कि जल्द से जल्द ज़कात अदा करे, चुनांचि बाज फुकहा ने ज़कात फर्ज हो जाने के बाद उसकी अदायगी में ताखीर को गुनाह का सबब लिखा है। (दुर्रेमुख्तार:3/191)

प्रश्न: ज़कात की रकम एक जगह से दूसरी जगह बैंक या मनी आरडर से भेजने में जो खर्च आता है क्या यह खर्च ज़कात की रकम से अदा किया जा सकता है या ज़कात देने वाला यह रकम जकात के अलावा अदा करे? क्या बैंक के सूद की रकम इस खर्च पर लगाई जा सकती है?

उत्तर: ज़क़ात भेजने में जो रकम खर्च हो उसको ज़कात की रकम से अदा नहीं किया जा सकता इसलिए कि ज़कात देने वाले पर जरूरी है कि वह ज़कात की रकम ज़कात के मुस्तहकीन तक पहुंचाए सूद की रकम इस काम पर खर्च करना भी जाइज नहीं है, इसलिए कि यह अपनी जिम्मेदारी में हराम माल खर्च करना होगा, जिम्मेदारी भी ऐसी जो खालिस इबादत है।

(फतावा हिन्दीया:1/170)

यहाँ यह वाजह रहे कि ज़कात के मुहस्सलीन जो किसी जगह ज़कात वसूल करते हैं फिर वह ज़कात की रकम अपने मदरसे के खाते में बैंक के जरिए भेजते हैं इस सूरत में उनके लिए बैंक का खर्च ज़कात की रकम से देना दुरुस्त होगा। ◆◇◆

पारलौकिक जीवन

—मुफ़्ती तंजीम आलम क़ासिमी

इस्लाम जिन अक़ीदों की शिक्षा देता है उनमें आख़िरत (परलोक) पर ईमान का अक़ीदा बहुत अहम और स्पष्ट है। इस्लाम ने धारणा पेश की एक तयशुदा वक़्त पर। दुनिया का मौजूदा निजाम ख़त्म हो जाएगा। सूरज, चांद सितारे, पहाड़, खुशकी, समुद्र, आसमान और ज़मीन और इसके सारे प्राणी ख़त्म कर दिये जाएंगे, जहां अल्लाह तआला की अदालत क़ायम होगी।

हर एक का लेखा—जोखा पेश किया जाएगा और बहुत ही इन्साफ़ के साथ हिसाब—किताब होगा। जिसके काम अच्छे और नेक होंगे उसे उनका अच्छा बदला मिलेगा और ऐसी जन्नत (स्वर्ग) में दाख़िल किया जाएगा जिसकी नेमत और ख़ूबियों की हम कल्पना भी नहीं कर सकते और जो बुरा होगा उसका जहन्नम (नरक) में डाल दिया जाएगा, जहां सख़्त अज़ाब होगा और दर्दनाक सज़ा दी जाएगी।

आख़िरत के बारे में इस तरह की जानकारी सही हदीसों में मौजूद है, जिस पर ईमान लाना हर मुसलमान के लिए लाज़िम है। आख़िरत का यह ईमान जितना पक्का और मज़बूत होगा उतना ही इबादत का शौक़ पैदा होगा। अच्छी बात ख़ूबियां और बेहतरीन आचरण पैदा होगा और बुराईयों, बेहयाइयों और तमाम तरह की बदकारियों से आदमी सुरक्षित रहेगा। जुल्म और नाइन्साफ़ी, खून—ख़राबा और अनैतिक हरकतों से बचेगा, इसलिए कि आख़िरत में अच्छे काम पर अच्छे नतीजे की उम्मीद और बुरे काम पर सज़ा व अज़ाब का ख़ौफ़ इन्सान को क़ाबू में रखता है। कोई भी बुरा क़दम उठाने से पहले आदमी यह सोचने पर मजबूर होगा कि यद्यपि इस दुनिया में कोई नहीं देख रहा, लेकिन मेरे पीछे एक असाधारण ताक़त है जिसकी नज़र आर पकड़ से छुटकारा नहीं मिल सकता, इसलिए वह हर हाल में सही रास्ते पर चलने की कोशिश करेगा। लेकिन जिस व्यक्ति को आख़िरत पर यक़ीन न हो उसे किसी पकड़ का ख़ौफ़ न होगा, वह अपने मन की इच्छा का कहना मानेगा, इस्लामी क़ानून और शिक्षाओं की अनदेखी करते हुए शैतानी कामों में सदैव लिप्त रहेगा, इसलिए कि जिस व्यक्ति को अल्लाह के सामने जवाबदेही का एहसास और पकड़ का ख़ौफ़ न हो वह कभी ईमानदारी के रास्ते पर चल ही नहीं सकता। इसलिए इस्लाम ने तौहीद (एकेश्वरवाद) और रिसालत के बाद सबसे ज़ियादा ज़ोर आख़िरत के अक़ीदे पर दिया है।

अरब के इतिहास से पता चलता है कि इस्लाम से पहले वहां बुराइयों का एक तूफ़ान उठा हुआ था बदकारी व ज़िनाकारी आम थी। ख़ून—ख़राबा, चोरी, डकैती, जुल्म व नाइन्साफ़ी और आपसी दुश्मनी की इन्सानी इतिहास में कोई मिसाल नहीं मिलती थी,

यह इसलिए कि उनका आख़िरत पर ईमान नहीं था, मौत के बाद की ज़िन्दगी और अल्लाह के सामने पेश होने की धारणा ख़त्म हो चुकी थी। वे समझते थे कि हम मिट्टी से पैदा हुए हैं और इसी मिट्टी में मिल जाएंगे, दोबारा हमें पैदा नहीं किया जाएगा। इस्लाम आया और उसने उनके सामने आख़िरत की धारणा पेश की इससे उनकी ज़िन्दगी में असाधारण बदलाव आया, वही लोग जो पहले इज़्ज़त के लुटेरे थे उसके रक्षक बन गये, जो बुराईयों के स्रोत थे उससे वे ऐसे नफरत करने वाले बन गये कि उनके ज़िक्र से भी उनका दिल कांप जाता था। जुल्म और नाइन्साफ़ी करने वाले पूर्ण न्याय करने वाले बन गये, दूसरों के माल लूटने वाले खुद अपना माल लुटाने वाले बन गये, झगड़े और दुश्मनी ख़त्म हो कर वे एक खानदान और एक घर के सदस्यों की तरह बन गये, हमदर्दी और महब्बत ऐसी कि खुद भूखे रहकर दूसरों को खिलाने वाले बन गये। इस तरह अचानक पूरे अरब में एक क्रांति आ गयी। इसकी बुनियादी वजह यही आख़िरत का अक़ीदा है जिसने इनकी ज़िन्दगी के रुख़ को बदल दिया था। अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 पर ईमान लाने के बाद हिसाब–किताब पर उन्हें यक़ीन हुआ क़ियामत, जन्नत व जहन्नम वग़ैरह की धारणा इसी तरह उनके ज़ेहन में बैठ गयी जैसे रात के बाद दिन के आने की कल्पना हर व्यक्ति में पायी जाती है, इसकी वजह से अचानक शैतानियत के बादल छट गये और एक बेहतरीन और मिसाली समाज बनकर तैयार हो गया।

वे लोग जिनका सहाबा रज़ि0 के बीच ऊँचा दर्जा हासिल था और नबी सल्ल0 ने जिनकी तारीफ़ की है वे तो अल्लाह से डरने वाले थे ही लेकिन जो मुसलमानों में कोई ख़ास रुत्बा नहीं रखते थे और न उनकी कोई अलग पहचान थी फिर भी इस्लाम ने उनको ऐसा बदला था कि कहीं एकांत में भी उनका ज़ेहन गुनाह की तरफ़ नहीं जाता था और इन्सान होने की वजह से कभी कोई गुनाह हो भी गया तो फ़ौरन वे आख़िरत के ख़ौफ़ से कांपने लगते और अपने आपको सज़ा के लिए पेश कर देते। जैसे एक बार हज़रत माइज़ असलमी रज़ि0 से ज़िना हो गया, कोई देखने वाला नहीं था कि ख़बर फैलने और रुसवाई का डर हो और न गवाह थे जिनसे जुर्म के सुबूत और सज़ा का ख़तरा हो।

वे चाहते तो इस गुनाह को छुपा सकते थे लेकिन आख़िरत की पकड़ ने उन्हें बेचैन कर दिया, वे सोच रहे थे कि लोगों की नज़र से अगर बच भी गए तो क्या हासिल? अंधेरे, उजाले हर हाल में देखने वाली अल्लाह तआला की नज़र से नहीं बचा जा सकता। इसलिए वे नबी सल्ल0 के सामने हाज़िर हुए और अपने आपको सज़ा के लिए पेश कर दिया यहां तक कि उनहें संगसार कर दिया गया और सारी दुनिया को आख़िरत के ख़ौफ़ का सबक़ दे गये।

(सहीह बुख़ारीः 6824)

आख़िरत पर ईमान और क़ियामत पर यक़ीन ने उनके दिलो-दिमाग़ को बदल दिया था। वे अल्लाह और उसके हिसाब एवं सवाल-जवाब से ऐसा डरते थे कि पुलिस और दुनिया की सज़ा और पकड़ से भी लोग ऐसा नहीं डरा करते। यहां तक कि जंगल में बकरियां चराने वालों में भी आख़िरत की धारणा ऐसी रच बस गयी थी कि शहर से दूर पहाड़ों के बीच भी वे गुनाह की कल्पना से भी कांप उठते थे।

एक बार हज़रत इब्ने-उमर रज़ि0 सफ़र के दौरान जंगल से गुज़र रहे थे, रास्ते में एक चरवाहे पर नज़र पड़ी जो बकरियां चरा रहा था, धूप तेज़ थी, इब्ने उमर रज़ि0 ने उस चरवाहे से कहा, आओ मेरे साथ खाना खाओ, चरवाहे ने कहा मैं रोज़े से हूं। इब्ने उमर रज़ि0 ने बड़े आश्चर्य से कहा, तुम इस सख़्त गर्मी में पहाड़ों के बीच बकरियां चराते हुए रोज़ा भी रखते हो, उसने कहा हां, अल्लाह तआला का करम है कि धूप की सख़्ती का मुझे एहसास नहीं होता। हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 ने चरवाहे के ईमान व परहेज़गारी को आज़माने के लिए कहा कि एक बकरी मेर हाथ बेच दो, उसकी क़ीमत भी दूंगा और उसका गोश्त भी दूंगा जिससे तेरे लिए इफ़्तार का इन्तिज़ाम होगा। चरवाहे ने जवाब दिया ये बकरियां मेरी निजी संपत्ति नहीं है, बल्कि मेरे मालिक की हैं (वह चरवाहा ग़ुलाम था)। इब्ने उमर रज़ि0 ने कहा कि तेरा मालिक जब बकरी के बारे में सवाल करे तो जवाब देना कि उसे भेड़िया खा गया। उस चरवाहे ने आसमान की तरफ़ उंगलियां उठाते हुए जवाब दिया, 'तो फिर अल्लह कहां है'। इब्ने उमर रज़ि0 चरवाहे का मज़बूत ईमान देख कर बहुत खुश हुए और उसे ख़रीद कर आज़ाद कर दिया और वे सारी बकरियां भी ख़रीद कर उसे दे दीं।

(बैहक़ी, शअबुल ईमानः 4908)

चरवाहा किसी बड़े और ऊँचे ख़ानदान का नहीं था और न उसे मुसलमानों में कोई ख़ास रुत्बा ही हासिल न था, लेकिन वह मुसलमान था और आख़िरत पर ईमान रखता था, इसी यक़ीन ने उसे इस बेईमानी से रोका, ऐसी जगह जहां उसे कोई देखने वाला नहीं था और भेड़िए के खाने की भी बड़ी संभावना थी लेकिन आख़िरत की फ़िक्र और अल्लाह के सामने जवाब देने का एहसास इतना ज़ियादा था कि एक क़दम भी ग़लत रास्ते पर न उठ सका।

आज की दुनिया में झूठ, बेईमानी, बेशर्मी, ख़ून ख़राबा और दूसरी जितनी भी बुराईयां चरम पर हैं उसकी वजह आख़िरत पर यकीन का कम होना है। बहुत से लोग बस ख़ानदानी मुसलमान हैं, उन्हें आख़िरत का वह पूरा यक़ीन और समझ नहीं जो इस्लाम चाहता है, इसलिए वे गुनाहों में व्यस्त हैं, मुसलमान होने के बावजूद बड़े-बड़े गुनाह करते हैं और ज़रा भी ख़ौफ़ पैदा नहीं होता और जिनको आख़िरत पर *ईमान ही नहीं* उनका गुनाह और जुर्मों से रुक जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

दुनिया की सज़ा और पकड़ से बचते हुए उनके

लिए खुली आज़ादी है जो चाहें करें। ज़ाहिर है कि ऐसी हालत में अपराध पर क़ाबू नहीं पाया जा सकता। देश में चाहे कितना ही सख़्त क़ानून बना लें और उसे लागू भी कर दें तब भी देश भ्रष्टाचार और अपराधों से मुक्त नहीं हो सकता। अतः बलात्कार के ख़िलाफ़ बहुत सख़्त क़ानून लागू किया गया, लेकिन कोई ऐसा दिन नहीं जब औरतों की इज़्ज़त न लूटी जाती हो यहां तक कि नाबालिग़ बच्चियां भी इस दौर में महफ़ूज़ नहीं रहीं। यही हालत दूसरे अपराधों का है। इन सारे अपराधों और बुराइयों पर क़ाबू पाने का एक ही रास्ता है वह है उनमें आख़िरत का ख़ौफ़ पैदा करना, अगर यह माहौल बना दिया जाए कि हमारे हर काम का क़ियामत के दिन हिसाब होगा और उस दिन की सख़्तियों और आख़िरत के अज़ाब से बचने के लिए बुरे कामों से बचना ज़रूरी है तो कोई व्यक्ति भी इसकी हिम्मत न कर सकेगा।

क़ुर्आन ने सब लोगों को इस बात से भी ख़बरदार किया है कि वे इस दुनिया की ज़िन्दगी में जो भी काम कर रहे हैं वे सब रिकार्ड में महफ़ूज़ हैं, एक चीज़ भी ऐसी नहीं जो महफ़ूज़ होने से रह गयी हो। यह रिकार्ड क़ियामत के दिन पेश होगा जिसमेंहर इन्सान की पूरी ज़िन्दगी की साफ़ तस्वीर होगी, रात के अंधेरे में किसी ने कोई काम किया होगा, जहां कोई देखने वाला न हो वह भी इसमें मौजूद होगा, राज़दारी में कोई नेकी या बुराई, की होगी वह भी इसमें मौजूद होगी।

खुद आदमी अपने इस आमालनामे (रिकार्ड) को देख कर आश्चर्य में होगा और सोचेगा कि बारीक से बारीक और छोटी से छोटी बात भी इसमें रिकार्ड है जिसको मेरे सिवा कोई नहीं जानता। मुमकिन है पहले ज़माने में इस पर लोगों को हैरत और आपत्ति हो लेकिन आज सांइस और टेक्नोलॉजी से यह बात साफ़ हो गयी है कि हर बात का रिकार्ड महफ़ूज़ किया जा सकता है, आज वीडियो ग्राफ़ी और कैमरों के ज़रिए से पूरा प्रोग्राम महफ़ूज़ रखा जाता है, और जब दिल चाहता है पूरा दृश्य आंखों के सामने होता है, तो जब अल्लाह का पैदा किया हुआ एक इनसान ऐसी चीज़ तैयार कर सकता है तो अल्लाह जो हर चीज़ और हर काम कर सकता है उसके लिए यह नामुमकिन या आश्चर्यजनक क्यों? इसी तरह पहले समझा जाता था कि जो आवाज़ हमारे मुंह से निकलती है वह हवा में थोड़ी–सी लहर पैदा करके ख़त्म हो जाती है मगर अब पता चला है कि हर आवाज़ अपने आसपास की चीज़ों पर अपना असर छोड़ जाती है जिसको दोबारा पैदा किया जा सकता है, तो फिर क्या बड़ी बात है कि फ़रिश्तों के ज़रिए से हमारे हर काम और हर हरकत को एक ख़ास रजिस्टर में महफ़ूज़ करने का इन्तिज़ाम हो, जिस पर हिसाब–किताब जज़ा (अच्छा बदला) और सज़ा का आधार हो।

(कान्ति जून 2016 से ग्रहीत)।

❖❖❖

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी
لب پہ آتی ہے دعا بن کے تمنا میری
ज़िन्दगी शम्अ़ की सूरत हो ख़ुदाया मेरी
زندگی شمع کی صورت ہو خدایا میری
दूर दुन्या का मेरे दम से अंधेरा हो जाए
دور دنیا کا مرے دم سے اندھیرا ہو جائے
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए
ہر جگہ میرے چمکنے سے اجالا ہو جائے
हो मेरे दम से यूं ही मेरे वतन की जीनत
ہو میرے دم سے یوں ہی میرے وطن کی زینت
जिस तरह फूल से होती है चमन की जीनत
جس طرح پھول سے ہوتی ہے چمن کی زینت
जिन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत या रब
زندگی ہو میرے پروانے کی صورت یارب
इल्म की शम्अ़ से हो मुझको महब्बत या रब
علم کی شمع سے ہو مجھ کو محبت یارب
हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
ہو میرا کام غریبوں کی حمایت کرنا
दर्दमन्दों से जईफों से महब्बत करना
دردمندوں سے ضعیفوں سے محبت کرنا
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
میرے اللہ برائی سے بچانا مجھ کو
नेक जो राह हो उस रह पे चलाना मुझको
نیک جو راہ ہو اس رہ پہ چلانا مجھ کو

नोटः यह एक बच्चे की दुआ़ है। अशआर पर ध्यान दें।

कठिन शब्दों के अर्थः— लब=होंट, दुआ=प्रार्थना, तमन्ना=मनोकामना, जिन्दगी=जीवन, शमअ़=दीप, मेरे दम से=मेरे द्वारा, अंधेरा=बुराई, वतन=देश, जीनत=शोभा, चमन=वाटिका, परवाना=पतंगा, सूरत=रूप, इल्म=ज्ञान, महब्बत=प्रेम, हिमायत=सहयोग, दर्दमन्दों=दुखियों, जईफ़ों=बूढ़ों, राह=मार्ग, रह=माग।